ISBN: 978-93-5659-654-2

स्नातक स्तर पर महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता का अध्ययन

राजीव अग्रवाल

प्रिंसी चौरसिया

प्रतिमा कुशवाहा

स्नातक स्तर पर महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता का अध्ययन

राजीव अग्रवाल

डीन–शिक्षा संकाय

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

(उत्तर प्रदेश)

प्रिंसी चौरसिया

एम० ए० (इतिहास), एम० एड०

प्रतिमा कुशवाहा

बी० एस–सी०, बी० एड०

स्नातक स्तर पर महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता का अध्ययन

राजीव अग्रवाल

प्रिंसी चौरसिया

प्रतिमा कुशवाहा

E–book संस्करण: 2022

मूल्य: ₹89

ISBN: 978-93-5659-654-2

प्रकाशक:

प्रतिमा कुशवाहा

अंबेडकर नगर (कुशवाहा कॉलोनी), बिसंडा रोड, अतर्रा (बाँदा)

Pin No.– 210201

Mob.– +91 6387935724

ई–मेल: pdk08081994@gmail.com

प्राक्कथन

किसी भी देश की पहचान उस देश के सांस्कृतिक और पुरातात्विक विकास से होती है| भारत में भी वैदिक काल से लेकर वर्तमान समय तक अनेक शहरों, मंदिरों और स्थलों इत्यादि की खोज की जा चुकी है, जिन्होंने इस देश के महत्व को विश्व स्तर पर कई गुना बढ़ाया है। भारत एक जीवंत और विविध सांस्कृतिक, विशाल भूगोल और इतिहास से जुड़ा हुआ देश है। देश की ऐतिहासिक उपलब्धियों के सबूत अभी भी दौरा कर रहे वास्तुकला, विरासत स्थलों और परंपराओं के पूजा और अध्ययन में दिखाई देता है। इन विरासत स्थलों में से कुछ बहुत अधिक वैश्विक और राष्ट्रीय ध्यान आकर्षित करते हैं। हालांकि, इन विरासत स्थलों को शहरीकरण की जोखिम, आर्थिक विकास और अप्रत्याशित परिवर्तन के निहितार्थ का सामना करना पड़ता है। विश्व धरोहर स्थलों, प्राचीन स्मारकों और पुरातात्विक स्थलों का संरक्षण राष्ट्रीय महत्व का है और पर्यटन के विकास, जो आर्थिक विकास का प्रमुख स्रोत में से एक है को बढ़ावा देने में मदद करता है।

महोबा जहां एक ओर विश्व प्रसिद्ध खजुराहो के लिए प्रसिद्ध है वहीं दूसरी ओर गोरखगिरी पर्वत, ककरामठ मंदिर, सूर्य मंदिर, चित्रकूट और कालिंजर आदि के लिए भी विशेष रूप से जाना जाता है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक स्नातक स्तर पर महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता का अध्ययन है। प्रस्तुत पुस्तक को सात अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय में सैद्धांतिक पृष्ठभूमि, समस्या का प्रादुर्भाव, अध्ययन के उद्देश्य, अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व के विषय में विस्तार से बताया गया है।

द्वितीय अध्याय में संबंधित साहित्य की समीक्षा सविस्तार की गयी है।

तृतीय अध्याय में महोबा नगर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, भौगोलिक स्थिति तथा ऐतिहासिक विरासतों का वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में महोबा नगर की दुर्लभ ऐतिहासिक विरासतों यथा–महोबा के जैन मंदिर, सूर्य मंदिर रहिलिया, आल्हा की गिल्ली, खाकरमठ का विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है।

पंचम अध्याय में अनुसंधान विधि, जनसंख्या, न्यादर्श एवं शोध उपकरण का अध्ययन विवेचन किया गया है।

षष्ठ अध्याय में प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण, विवेचन एवं विश्लेषण किया गया है।

सप्तम अध्याय में शोध अध्ययन का निष्कर्ष, अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता एवं अध्ययन के सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबन्ध पर आधारित है। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसन्धानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं है, जब तक कि वह जन सामान्य के लिए सुलभ न हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक निश्चित ही विद्यार्थियों में गणित के प्रति रुचि विकसित करने में सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लिखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो, हम आभारी रहेंगे।

राजीव अग्रवाल

प्रिंसी चौरसिया

प्रतिमा कुशवाहा

अनुक्रमणिका

अध्याय प्रथम

अध्ययन परिचय

1.1 सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

किसी भी देश की पहचान उस देश के सांस्कृतिक और पुरातात्विक विकास से होती है| भारत में भी वैदिक काल से लेकर वर्तमान समय तक अनेक शहरों, मंदिरों और स्थलों इत्यादि की खोज की जा चुकी है, जिन्होंने इस देश के महत्व को विश्व स्तर पर कई गुना बढ़ाया है | भारत एक जीवंत और विविध सांस्कृतिक, विशाल भूगोल और इतिहास से जुड़ा हुआ देश है। देश की ऐतिहासिक उपलब्धियों के सबूत अभी भी दौरा कर रहे वास्तुकला, विरासत स्थलों और परंपराओं के पूजा और अध्ययन में दिखाई देता है। इन विरासत स्थलों में से कुछ बहुत अधिक वैश्विक और राष्ट्रीय ध्यान आकर्षित करते हैं। हालांकि, इन विरासत स्थलों को शहरीकरण की जोखिम, आर्थिक विकास और अप्रत्याशित परिवर्तन के निहितार्थ का सामना करना पड़ता है। विश्व धरोहर स्थलों, प्राचीन स्मारकों और पुरातात्विक स्थलों का संरक्षण राष्ट्रीय महत्व का है और पर्यटन के विकास, जो आर्थिक विकास का प्रमुख स्त्रोत में से एक है को बढ़ावा देने में मदद करता है।

महोबा जहां एक ओर विश्व प्रसिद्ध खजुराहो के लिए प्रसिद्ध है वहीं दूसरी ओर गोरखगिरी पर्वत, ककरामठ मंदिर, सूर्य मंदिर, चित्रकूट और कालिंजर आदि के लिए भी विशेष रूप से जाना जाता है। महोबा झांसी से 140 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। महोबा उत्तर प्रदेश राज्य का एक जिला है। ऐतिहासिक दृष्टि से भी यह स्थान काफी महत्वपूर्ण है। काफी समय तक चन्देलों ने यहां शासन किया है। अपने काल के दौरान चंदेल राजाओं ने कई ऐतिहासिक किलों और मंदिरों आदि का निर्माण करवाया था। इसके पश्चात् इस जगह पर प्रतिहार राजाओं ने शासन किया। महोबा सांस्कृतिक दृष्टि से काफी प्रमुख माना जाता है। पहले इस जगह को महोत्सव नगर के नाम से जाना जाता था, लेकिन बाद में इसका नाम

बदल कर महोबा रख दिया रोचक तथा आनंददायक बना देते हैं| चित्रों द्वारा विद्यार्थियों की रचनात्मक क्षमता, सौन्दर्यबोध व आलोचनात्मक समझ विकसित होती है|

महोबा उत्तर प्रदेश के दक्षिण में तथा मध्य प्रदेश के उत्तर में स्थित है। यह झांसी से 140 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है| महोबा की स्थिति 25.28°N 79.87°E पर है। यहां की औसत ऊंचाई 214 मीटर (702 फीट) है। । महोबा का अधिकांश भाग पठारी है। जिले की भौगोलिक विषमता के आधार पर इसे चार भागों मे बांटा गया है। उत्तर का मैदानी भाग, पठारी भाग, पर्वतीय क्षेत्र, वन्य क्षेत्र| **उत्तर का मैदानी** भाग महोबा जिले का उत्तर- पूर्वी भाग इसके अंतर्गत आता है। कबरई एवं चरखारी उत्तरी भाग मैदानी हैं। **पठारी भाग** कबरई एवं चरखारी विकास खण्ड के उत्तरी भाग को छोड़ कर पूरे महोबा का धरातल पठारी है। पठारी भाग के अंतर्गत महोबा का 80 प्रतिशत भाग आता है। **पर्वतीय क्षेत्र** इसके अधीन पनवाड़ी, जैतपुर एवं दक्षिणी कबरई के क्षेत्र आते हैं। कुलपहाड़, अजनर, नौगांव, धुवनी प्रमुख पर्वतीय केन्द्र हैं। इस भाग में विन्ध्याचल की छोटी-छोटी पहाड़ियां फैली हैं। **वन्य क्षेत्र** बेला ताल एवं कबरई बांध का मध्य भाग मुख्य रूप से वन क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

वास्तुकला की दृष्टि से यह क्षेत्र महत्वपूर्ण रहा है| यहां पर खजुराहो शैली, तथा पंचायतन नागरिय शैली के दर्शन होते हैं इस क्षेत्र को देखने में ऐसा प्रतीत होता है कि वास्तुकारों ने इसकी रचना अग्निपुराण तथा अन्य वस्तु ग्रंथों से प्रेरणा प्राप्त की है| इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि महोबा निश्चित ही भारत की बहुमूल्य ऐतिहासिक धरोहर है| यह क्षेत्र शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं तथा पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करने में पूर्ण समर्थ है| कनिंघम ने इस क्षेत्र की लोकप्रियता का प्रथम कारण यहां की आर्थिक समृद्धि तथा द्वितीय कला तथा संस्कृति को माना है|

यहां के समृद्धि दुर्ग, देवालय तथा जलाशयों की प्रकृति व रचना से स्पष्ट होता है कि यह क्षेत्र आर्थिक दृष्टि से यह एक समृद्धशाली क्षेत्र रहा है| महोबा क्षेत्र के समीप कई पहाड़ी तथा अन्य बहुमूल्य धातुओं के संबंध में जानकारी मिली है| इसके अतिरिक्त आस-पास के क्षेत्रों में कीमती पत्थर पाए जाते हैं

जो उस समय के आर्थिक समृद्धि के घोतक थे इस प्रकार इस क्षेत्र में आर्थिक समृद्धि ने यहां की कला तथा संस्कृति को विकसित करने होने का शुभ अवसर प्रदान किया है|

किसी भी क्षेत्र के औद्योगिक विकास में खनन प्रक्रिया का विशेष महत्व है| यहां पर पाए जाने वाले प्रमुख खनिजों में बालू, मोरंग, ग्रेनाइट पत्थर आदि प्रमुख हैं इसके अतिरिक्त महोबा के समीपवर्ती क्षेत्र में बहुमूल्य खनिज जैसे हीरा आदि की उपलब्धता का वर्णन मिलता है| इस क्षेत्र में कोई बड़ा उद्योग नहीं है| किंतु कुटीर उद्योगों में मिट्टी के बर्तन बनाने के उद्योग, चमड़े के जूते बनाने का कार्य, बैलगाड़ी बनाने का कार्य तथा छोटे-छोटे लोहे के यंत्र आदि बनाने के कार्य संपन्न किए जाते हैं| इसके अतिरिक्त यहां पर खाने वाले चूने की भट्ठियां का भी कार्य किया जाता है |यह क्षेत्र पान की खेती के लिए भी उपयुक्त क्षेत्र माना गया है |

महोबा की लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या खेती के काम में लगी हुई है। खेती वर्षा पर निर्भर है एवं वर्षा मानसून पर। महोबा में वर्षा का अभाव कभी-कभी कृषि को नष्ट कर देता है जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर हो जाती है। गर्मी अधिक पड़ने के कारण लोग सूती वस्त्रों एवं साफी का विशेष रूप से प्रयोग करते है। धूल भरी आंधी और लू जन सामान्य को बेचैन कर देता है। जनपद के अनेक कुएं, तालाब सूख जाते हैं। पशु-पक्षी पानी की कमी एवं गर्मी की अधिकता से प्यास से व्याकुल होकर अपनी जान दे देते हैं। मनुष्यों के लिए भी पेयजल की समस्या खड़ी हो जाती है। पानी की कमी से पेड़ पौधे सूख जाते हैं। महोबा जिले में जाड़ा सामान्य पड़ता है। परन्तु कभी-कभी ठंड एवं पाला पड़ता है। पाला के प्रभाव से फसलें नष्ट हो जाती हैं। जलवायु का असर यहां की वनस्पति एवं कृषि पर भी पड़ता है। महोबा में मौसम का सर्वाधिक प्रभाव पान की खेती पर पड़ता है।

प्राकृतिक सौंदर्य दर्शन व स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से महोबा एक धनी क्षेत्र रहा है| यहां की पहाडियों, सरोवर, पत्थर, जीव जंतु आदि दर्शनीय है| इसके अलावा यहां विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक औषधियों सीताफल, पान, गोरख इमली है|

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

अनुसंधान समस्या की उत्पत्ति प्रायः इस अनुभूति के द्वारा होती है कि किसी क्षेत्र विशेष में किसी कार्य के सुचारू ढंग से संचालन में कोई बाधा है एवं उस बाधा को दूर किया जा सकता है| वस्तुतः आवश्यकता, जिज्ञासा व असन्तोष को आविष्कार की पृष्ठभूमि तैयार करने में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है|

किसी भी राष्ट्र का इतिहास उसके वर्तमान और भविष्य की नींव होता है| देश का इतिहास जितना गौरवमयी होगा वैश्विक स्तर पर उसका स्थान उतना ही ऊंचा माना जाएगा| यूं तो बीता हुआ कल कभी वापस नहीं आता लेकिन उस काल में बनी इमारतें और लिखे गए साहित्य उन्हें हमेशा सजीव बनाए रखते हैं| यही वजह है कि ऐसी वर्षों पुरानी य यूं कहें कई सदियों पुरानी ऐतिहासिक इमारतें जो संबंधित राष्ट्र के वर्षों पुरानी इतिहास की गौरव गाथा कहती हैं, उनके संरक्षण का पूरा पूरा प्रयास किया जाता है| भारत में भी कई ऐतिहासिक मंदिर, पुरास्थल एवं अन्य इमारते हैं जो स्वयं हमारे विशाल और सम्मानजनक इतिहास की कहानी कहती हैं लेकिन समय के साथ-साथ इन इमारतों और उन में रखे गए साहित्य को बहुत नुकसान पहुंचा है| हमने भी परवाह किए बगैर उन अनमोल धरोहरों को मनमाने ढंग से खंडित किया है

यह भी सत्य है कि वक्त रहते यदि हम अपनी भूल को पहचान नहीं पाए तो अपनी विरासत को धीरे-धीरे खो देंगे| आज आवश्यकता है यह है की प्रत्येक व्यक्ति अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक हो| साथ ही आवश्यकता इस बात की भी है कि पुरानी हो चुकी जर्जर इमारतों की मरम्मत की जाये तथा भवनों और महलों को पर्यटन स्थल बनाकर उनकी चमक को बनाये रखने का

प्रयास किया जाये| किताबों और स्मृति चिन्ह को संग्रहालय में जगह दी जाए | यह तभी सम्भव होगा जब प्रत्येक व्यक्ति अपनी विरासतों के प्रति जागरूक और जिम्मेदार होगा| विरासतों को संभाल कर रखना इतना आसान नहीं है इसलिए यूनेस्को द्वारा हर वर्ष विश्व विरासत दिवस मनाया जाता है जिसका स्पष्ट उद्देश्य इन इमारतों और उनमें रखी गई धरोहरों की देखभाल करना है|

अतः उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर ही प्रस्तुत समस्या का चयन किया गया है| इस समस्या के अध्ययन से केवल विद्यार्थियों का ही नहीं अपितु अभिभावक, शिक्षक, समाज तथा राष्ट्र को लाभ होगा|

1.3 अध्ययन का औचित्य

शोधकर्त्री को समस्या का चयन करने से पूर्व उसके औचित्य एवं उपयोगिता के सम्बन्ध में विचार कर लेना चाहिये| शोध वस्तुतः ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में व्यवस्थित संज्ञान है| शोध में गहन निरीक्षण का प्रत्यय होता है इसमें किसी सीमित क्षेत्र की किसी समस्या का सर्वांगीण विश्लेषण होता है| उसकी निरीक्षण प्रक्रिया में वैज्ञानिक निरीक्षण ही क्रमबद्ध सौद्देश्य सुनियोजित होते हैं|

प्रस्तुत अध्ययन में महोबा नगर के ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया जा रहा है| हमारी ऐतिहासिक विरासतें हमें अतीत के बारे में बहुत कुछ सिखाती और बतलाती है | साथ ही इन ऐतिहासिक विरासतों के देखने के लिए दूर- दूर से पर्यटक यहाँ आते हैं| वर्तमान समाज एवं आने वाली पीढ़ी को ऐतिहासिक स्थलों को देखने की जिज्ञासा होती है दर्शनीयता, कलात्मकता दृश्यों के प्रति आकर्षण व्यक्ति को बार-बार उस स्थल पर आने की प्रेरणा प्रदान करता है| उन्हें दुर्गम स्थलों गुफाओं, प्राकृतिक दृश्यों को देखने की जिज्ञासा रहती है साथ ही विभिन्न सामाजिक संगठनों, वर्गों, समुदाय के लोगों लोग जब किसी स्थान विशेष पर आते हैं तो स्थानीय जनता का उनसे संपर्क होता है वे उन्हें आवश्यकतानुसार आश्रय, भोजन आदि संसाधनों को उपलब्ध कराते हैं| उनकी हर प्रकार से व्यवस्था करते हैं| इस प्रकार से उनमें एक दूसरे को समझने व परखने के

साथ-साथ उत्तरदायित्व पूर्ण भावना की अनुभूति होती है | किन्तु आज हमारी ऐतिहासिक विरासतों को पर्याप्त संरक्षण एवं एवं लोगों को सही जानकारी न होने की वजह से इनका अस्तित्व समाप्त हो रहा है |इनके आस-पास साफ सफाई न होने से लोगों का रुझान इस ओर कम होता जा रहा है| इस समय कई स्मारक अतिक्रमण का शिकार हो गई हैं| आस-पास बस्ती होने की वजह से इन के अस्तित्व को खतरा हो रहा है| जब तक लोग अपने ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरुक नहीं होंगे तब तक इन विरासतों को आरक्षण दे पाना मुश्किल होगा| अतः प्रस्तुत अध्ययन इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर किया जा रहा है|

1.4 समस्या कथन

प्रस्तुत अध्ययन का समस्या कथन इस प्रकार है **"स्नातक स्तर पर महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता का अध्ययन"**

1.5 समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

1.5.1 स्नातक स्तर – स्नातक स्तर से अभिप्राय किसी विश्वविद्यालय या महाविद्यालय से बी.ए., बी.कॉम या उसके समक्ष उपाधि प्राप्त व्यक्ति से है|

1.5.2 महोबा - महोबा भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश का एक जिला है। महोबा की स्थिति 25.28°N 79.87°E पर है। यहां की औसत ऊंचाई 214 मीटर (702 फीट) है|

1.5.3 नगर प्रस्तुत लघु शोध में नगरीय क्षेत्र से तात्पर्य ऐसे क्षेत्र से है जहाँ पर जनसंख्या घनत्व और मानवीय क्रियाकलाप उस क्षेत्र के आसपास के क्षेत्रों से अधिक होता है। नगरीय क्षेत्र में आमतौर पर नगरों, कस्बों, या उपनगरीय विस्तारों को सम्मिलित किया जाता है लेकिन इसमें ग्रामीण क्षेत्रों को सम्मिलित नहीं किया जाता। नगरीय क्षेत्रों का निर्माण और आगे का विकास नगरीकरण द्वारा किया जाता है। नगरीय क्षेत्र के विस्तार का मापन जनसंख्या घनत्व और अव्यवस्थित फैलाव से किया जाता है।

भारत की 2011 की जनगणना के लिए नगरीय क्षेत्र की परिभाषा इस प्रकार थी –

- ❖ एक नगर पालिका, निगम, छावनी बोर्ड या अधिसूचित नगर क्षेत्र समिति, आदि के सभी स्थान।
- ❖ कम से कम 5,000 की जनसंख्या।
- ❖ कामकाजी पुरुष जनसंख्या का कम से कम 75 % अकृषि कार्यों में संलग्न।
- ❖ जनसंख्या घनत्व कम से कम 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी। *()*

1.5.3 दुर्लक्ष

प्रस्तुत लघु शोध में 'दुर्लक्ष ' से तात्पर्य ऐसे स्थलों से है जो अति प्राचीन है |

1.5.4 ऐतिहासिक विरासतों

ऐतिहासिक विरासत स्थल खास स्थलों जैसे वन क्षेत्र, पर्वत, झील, मरुस्थल, स्मारक, भवन इत्यादी को कहा जाता है | प्रत्येक विरासत स्थल उस देश विशेष की संपत्ति होती है, जिस देश में वह स्थल प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में **'ऐतिहासिक विरासतों'** से अभिप्राय महोबा नगर के ऐतिहासिक स्थलों से है|

1.5.5 जागरूकता जागरूकता यानि सजग जीवन-चैतन्य जीवन अर्थात् चिंतन पर आधारित जीवन, मंथन से निकला जीवन। जागरूकता यानि बाहरी संसार और भीतरी संसार की सम्पूर्ण जानकारी, उचित-अनुचित की जानकारी|

प्रस्तुत लघु शोध में **'जागरूकता'** से तात्पर्य स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को महोबा नगर के दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों की जानकारी से है|

1.6 अध्ययन के उद्देश्य

❖ महोबा नगर की ऐतिहासिक विरासतों का निम्न के संदर्भ में अध्ययन करना-

- स्थापत्य एवं वास्तुकला
- विशेषता एवं महत्व
- दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों को चिह्नित करना

❖ महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन

❖ महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति छात्र-छात्राओं की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना

❖ महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता के सम्बन्ध हेतु सुझाव प्रस्तुत करना

❖ महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों में पर्यटन की संभाव्यता का अध्यन करना

❖ महोबा नगर के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना |

1.7 अध्ययन का सीमांकन

किसी भी अनुसंधान कार्य में एक महत्वपूर्ण सोपान समस्याओं को सीमांकित करना है| कोई भी शोधकर्त्री शोध कार्य के लिए किसी विशेष समस्या ग्रस्त क्षेत्र का चुनाव करता है तथा विस्तृत

अध्ययन के स्थान में गहन अध्ययन को वरीयता देता है | समस्या का स्वरुप साधारणत: अधिक व्यापक होता है | समस्या का व्यावहारिक रूप में अध्ययन करने के लिए सीमांकन करना आवश्यक होता है | सीमांकन अध्ययन की चाहरदीवारी होता है | शोधकर्त्री ने प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित सीमांकन किया है |

- प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के केवल महोबा नगर में सीमित है|
- प्रस्तुत अध्ययन महोबा नगर के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों तक सीमित रहेगा|

1.8 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

भारत की कला-संस्कृति एवं इसका इतिहास अत्यंत समृद्ध है एवं हमारी कला-संस्कृति की आधरशिला हमारे विरासत स्थल हैं। इन स्थलों के सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व के साथ-साथ इनका व्यापक आर्थिक महत्त्व भी है| हमारी एक बहुत बड़ी समस्या दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों को सुरक्षित रखने की भी है| पूरे देश में ऐसी अनगिनत प्राचीन और ऐतिहासिक महत्व की इमारतें हैं जिनकी देखभाल ठीक से नहीं हो रही हैं| कुछ इमारतें तो पूरी तरह उपेक्षित हैं और अगर उन पर ध्यान न दिया गया तो वे गिर जाएँगी| सरकारी विभाग अपनी सीमा और साधनों की कमी के कारण केवल उन्हीं विरासतों की देखभाल करते हैं जो उनकी सूची में शामिल हैं पर यह काफ़ी नहीं है| देश की सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण की ज़िम्मेदारी केवल सरकार की ही नहीं है वरन यह लोगों का मौलिक कर्तव्य भी है| किन्तु यह तभी सम्भव होगा जब लोग अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक होगे| अतः इन्ही तथ्यों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत लघु शोध कार्य किया जा रहा है|

अध्याय द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

2.0 सम्बन्धित साहित्य का अर्थ

शोध कार्य के पूर्व सम्पन्न अनुसंधानों को सामूहिक रुप में अनुसंधान साहित्य की संज्ञा दी जाती है| सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान-कोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित-अप्रकाशित शोध प्रबंधो एवं अभिलेखों आदि से है जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता का अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है| एक अनुसंधान दूसरे अनुसंधान के लिए सहायक सिद्ध होता है| इससे एक तो कार्य की पुनरावृत्ति नहीं होती है, दूसरे पहले जिन तथ्यों पर प्रकाश नहीं डाला गया उन पर प्रकाश डालकर शोधग्रन्थ को महत्वपूर्ण बनाया जा सकता है| *(गुप्ता, एस. पी.पृष्ठ 54)*

अनुसंधान कार्य में साहित्य सर्वेक्षण की समीक्षा करने की आवश्यकता, उपयोगिता तथा महत्व स्वयं सिद्ध हैं| अनुसंधान के क्षेत्र में संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान हो जाता है| साहित्य के सर्वेक्षण के द्वारा ही अनुसंधानकर्ता किसी क्षेत्र में क्या हो चुका है? को क्षेत्र में क्या करना शेष है? से अलग करके अपनी समस्या को सार्थक, मौलिक तथा अद्वितीय बनाता है एवं अनुसंधान की एक उपयुक्त रूपरेखा तैयार करने में मदद करता है| अनुसंधान में साहित्य सर्वेक्षण की आवश्यकता तथा महत्व बारे में विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से विचार व्यक्त किए हैं|

जॉन डब्लू. बैस्ट के अनुसार "व्यवहारिक दृष्टि से समस्त मानव ज्ञान पुस्तकों तथा पुस्तकालयों में प्राप्त किया जा सकता है| अन्य जीवों, प्रत्येक पीढ़ी में नये सिरे से प्रारंभ करना पड़ता है, से भिन्न मान पूर्व में संग्रहित व अभिलेखित ज्ञान से निर्माण करता है| ज्ञान के अथाह भण्डार में उसके सतत योगदान ही मानव प्रयासों के सभी क्षेत्रों में प्रगति को संभव बनाते हैं|"

डब्लू.आर. बोर्ग ने साहित्य सर्वेक्षण की आवश्यकता तथा महत्व की चर्चा करते हुए कहा है कि, "किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला की रचना करता जिस पर समस्त भावी कार्य

किया जाता है| यदि संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण के द्वारा ज्ञान की इस आधारशिला को दृढ नहीं कर लेते हैं हमारा कार्य सतही व नवसिखुआ होने की संभावना है एवं प्राय: मूर्त में किसी अन्य के द्वारा अच्छे ढंग से किया गया कार्य को दोहराना रहता है|

किसी भी अनुसंधान कार्य को उचित रुप से संपादित करने के लिए सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण आवश्यक होता है, क्योकि इसके माध्यम से वह अपने अभीष्ट अनुसंधान क्षेत्र में अर्थपूर्ण प्रश्न की पहचान करने एवं ठोस तथा वस्तुनिष्ठ आधार प्राप्त करने में समर्थ होता है| तथा वह पूर्वान्वेषित अनुसंधान क्षेत्र या किसी समस्या पर पहले किए गए शोध द्वारा उत्तर पुनः शोध का विषय बनने की दिशा में पुनरावृत्ति दोष से बच सकता है| सम्बन्धित साहित्य से अधोलिखित जानकारी उपलब्ध होती है

- किसी पूर्व अन्वेषित क्षेत्र में शोधों के अंतर्गत ऐसे चरों के विषय में संकेत प्राप्त होते हैं जिन्हें महत्वपूर्ण प्रमाणित किया जा चुका है|
- पूर्व सम्पादित कार्यों तथा अन्य कार्यों की, जिन्हें सार्थक ढंग से आगे बढ़ाया जा सकता है या लागू किया जा सकता है, सूचना प्राप्त होती है|
- किसी क्षेत्र विशेष के अंतर्गत निष्कर्षों की दृष्टि से संपन्न कार्यों की यथास्थिति का पता लगता है|
- लिए गए अनुसंधान विषय में किस विधि का प्रयोग उपयुक्त होगा, कौन से उपकरण उचित होंगे, किस प्रकार की सांख्यिकी का प्रयोग किया जाएगा इत्यादि कि जानकारी मिलती है|
- लिए गए अनुसंधान विषय की सफलता तथा इसकी उपयोगिता के संबंध में पूर्व अनुमान लगाया जा सकता है|
- समस्या के समाधान हेतु अनुसंधान की समुचित विधि का सुझाव देता है|
- यह अब तक उस क्षेत्र में से हो चुके कार्य की सूचना देता है तथा समस्या के अध्ययन में सूझ पैदा करता है|

2.1 शोध से सम्बन्धित साहित्य

2.1.1 समाचार पत्रों से प्राप्त सूचनाए

अमर उजाला ब्यूरो 10/07/2016

महोबा।

आल्हा ऊदल ने वीरता का पूरे देश में फहराया परचम

देश में शौर्य, वीरता और पराक्रम का लोहा मनवाने वाले वीर आल्हा की जयंती आज मनाई जा रही है। 835 वर्ष पहले शहर के ऐतिहासिक कीरत सागर तट पर दिल्ली नरेश पृथ्वीराज चौहान से हुए भीषण युद्ध में आल्हा ऊदल ने जीत दर्ज की थी। रक्षाबंधन के दिन युद्ध होने के चलते बुंदेलों ने पर्व नहीं मनाया था और दूसरे दिन विजय मिलने के बाद बहनों ने भाइयों की कलाई पर राखी बांधी थी। आल्हा ऊदल की वीरता को इस दफा पाठ्यक्रम में भी शामिल किया गया है।

मातृभूमि के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने वाले वीर आल्हा का जन्म 25 मई 1140 ई. को महोबा के ग्राम दिसरापुर में हुआ था। आल्हा के पिता बच्छराज, मां देवल, भाई ऊदल और बहन सुजाता थे। आल्हा के जन्म की खबर पाकर महाराज परमाल व महारानी मल्हना बधाई देने गए। राजा ने पूरे राज्य में महोत्सव मनाने का आदेश दिया। तभी से महोबा का नाम महोत्सव नगर विख्यात हो गया। मां देवल आल्हा को अस्त्र शस्त्र, तीर तलवार, भाला, घुड़सवारी और आपस में लड़ाकर मल्ल युद्ध की शिक्षा देती थी।

आल्हा परिषद के अध्यक्ष शरद तिवारी दाऊ बताते है कि आल्हा ऊदल की वीरता के किस्से पूरे देश में चर्चित है। आल्हा ने गुरु गोरखनाथ की एक वर्ष सेवा की। तब गुरु गोरखनाथ ने आल्हा से वरदान मांगने को कहा। आल्हा की मांग पर गुरु गोरखनाथ ने आल्हा को अमर होने का आशीर्वाद दिया था। 835 वर्ष पहले रक्षाबंधन के दिन दिल्ली नरेश पृथ्वीराज चौहान ने सेना के साथ महोबा में चढ़ाई कर दी थी। कीरत सागर तट पर हुए भीषण युद्ध में आल्हा ऊदल ने पृथ्वीराज चौहान

पर जीत दर्ज करते हुए उसे खदेड़ दिया। तभी से महोबा में रक्षाबंधन का पर्व दूसरे दिन मनाया जाता है और एक सप्ताह तक विशाल मेले का आयोजन होता है

प्राचीन विरासतों के संरक्षण की समाज की जिम्मेदारी-चेयरमैन

दैनिक जागरण ब्यूरो 20/07/2017

स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय में संगोष्ठी का आयोजन| चंदेल कालीन विरासतें जिले के इतिहास का आइना|

वीर आल्हा ऊदल की नगरी का इतिहास वीरता से ओतप्रोत है। प्राचीन विरासतों के संरक्षण की जिम्मेदारी समाज की है। इसलिए समाज को इन धरोहरों की रक्षा करनी होगी। यह बात स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय में आयोजित संगोष्ठी को संबोधित करते हुए चेयरमैन दिलाशा तिवारी ने कही।

गुरूवार को स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय में आयोजित गोष्ठी का शुभारंभ मुख्य अतिथि चेयरमैन दिलाशा तिवारी ने दीप प्रज्जवलित कर किया। दीपिका शुक्ला ने मां चंद्रिका देवी की महिमा का बखान करते हुए यहां के पार्क के जीर्णोद्धार की मांग उठाई तो शबनम ने सूर्य मंदिर को पर्यटन के रूप में विकसित करने के लिए कारगर प्रयास करने की बात पर जोर दिया। प्रीति सिंह द्वारा वीरांगना दुर्गावती की वीरता का वर्णन करने के साथ ही बुंदेलखंड की वीरांगनाओं की वीरता पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने वीरांगनाओं के नाम पर स्मारक बनाए जाने की मांग की। छात्रा नमीरा अली ने वीर आल्हा ऊदल के गुरू ताला सैय्यद की ऐतिहासिक चंदेल सेना व महोबा के लिए दिए गए बलिदान को रेखांकित किया। छात्राओं द्वारा यहां के ऐतिहासिक धरोहर खकरामठ, सूर्यमंदिर, पीर मुबारक शाह, शिव तांडव, शाही मसजिद,पक्षी विहार, विजय सागर सहित अन्य विरासतों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए इनके जीर्णोद्धार की मांग की। कहा कि प्राचीन विरासतों के जीर्णोद्धार से पर्यटन के क्षेत्र में बढ़ोत्तरी होगी। गोष्ठी में चंदेलों की जल संरक्षण योजना की भी सराहना की गई। महोबा के पान

की खेती पर प्रकाश डाला गया। पान की खेती को बढ़ावा देने पर पलायन रूकने की बात जोरदार तरीके से रखी गई। इस मौके पर चेयरमैन दिलाशा तिवारी ने कहा कि नगर का विकास उनकी प्राथमिकताओं में शामिल है। वह नगर के प्रयास के लिए हर संभव प्रयास करेंगी। रोटी बैंक के संस्थापक हाजी पावेश ने भी नगर के ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने सूखा व अन्य प्राकृतिक आपदाओं से बुंदेलखंड में आई त्रासदी से निपटने के लिए मिलजुलकर प्रयास करने की बात पर जोर दिया। कार्यक्रम में चेयरमैन प्रतिनिधि सौरभ तिवारी, प्रबंधक डॉ अभय सिंह भदौरिया व प्राचार्य मोहम्मद आरिफ राइन ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन प्रोफेसर राहुल ताम्रकार ने किया

मिश्र, प्रत्युष: (2002) ने *बुन्देलखण्ड में पर्यटन विकास नियोजन कालिंजर के विशेष सन्दर्भ* में पाया की बुंदेलखंड के कालिंजर सहित संपूर्ण क्षेत्र में सार्वजनिक त्योहारों तथा पारिवारिक उत्सवों में संपन्न होने वाले परंपरागत लोक नृत्यों में राई, सैरा, झिझिया, दिवारी गायन, नृत्य आदि मुख्य हैं| विभिन्न मांगलिक अवसरों एवं उत्सवों में यहां महिलाओं द्वारा भूमि व भित्ति चित्रण तथा अलंकरण अत्यंत मनोहारी तथा पर्यटकों को बरबस अपनी ओर आकर्षित करने में सक्षम है| इसी प्रकार वर्ष भर संपन्न होने वाले पर्व एवं त्योहारों में हल्दी, गेरु, चावल, मिट्टी आदि से घरों में नाना आकर्षण चित्रण किए जाते हैं| इस क्षेत्र में पूजन हेतु पुतारियों की आकृतियां बनाने का प्रचलन है|

रामसजीवन (2006): *बुन्देलखण्ड के दुर्ग एक ऐतिहासिक अध्ययन* में पाया की संपूर्ण बुंदेलखंड में प्राचीन काल से लेकर उत्तर मध्य युग तक 400 से अधिक दुर्ग थे| जिनमें से अधिकांश दुर्ग नष्ट हो चुके हैं| शोध प्रबंध के माध्यम से दुर्ग को पर्याप्त बोध हुआ इनकी वास्तु विधि का बोध हुआ| दुर्ग में उपलब्ध आवासीय स्थल, धर्मस्थल, जलाशय तथा सामाजिक स्थलों का बोध हुआ| अनेक दुर्गों में प्राचीन वेशभूषा के चित्र अस्त्र-शस्त्र आभूषण आदि भी देखने को मिले जो विभिन्न संग्रहालयों में

संग्रहित हैं| साथ ही इस शोध प्रबंध के माध्यम से बुंदेलखंड में पर्यटन व्यवसाय को प्रोत्साहन मिलेगा जो व्यक्ति बुंदेलखंड में पर्यटन के दृष्टिकोण से आते हैं| वह इन दुर्गों को देखेंगे जिससे सरकार की आर्थिक आय उपलब्ध होगी तथा जो समस्याएं पर्यटन के लिए यहां हैं उनका भी समाधान होगा| इसके साथ ही आवासीय स्थल बनेंगे तथा बेरोजगार युवकों को अनेक प्रकार के रोजगार पर्यटन व्यवसाय के माध्यम से उपलब्ध होंगे |

तिवारी, वरुण (2007): ने अपने अध्ययन *बुन्देलखण्ड के वैष्णव मन्दिरों का सांस्कृतिक अध्ययन* में पाया की बुंदेलखंड के वैष्णव मन्दिरों कि यह संपदा सुदृढ़ स्थिति में खड़े तथा कहीं-कहीं जर्जर अवस्था में हैं| व कहीं यत्र-तत्र बिखरे भग्नावशेष ही सही मिले हैं| फिर भी इनमें ऐतिहासिकता है आवश्यकता थी एक पुरातात्विक दृष्टि की जिसके द्वारा इनके संकलन व ऐतिहासिक संस्कृति अध्ययन से यह मंदिर पुनर्जीवित हो सकें| इस तरह के प्रयासों से इन अनमोल धरोहरों को मौलिक स्थिति में जीवित रख सकें ताकि इनको नष्ट होने से बचाया जा सके| इन मंदिरों के आराधना के लिए चंदन, तुलसीपत्र तथा पीले वस्त्रों को अधिक उपयोगी बताया गया और साधना के लिए तुलसी की माला तथा मंत्रों के शुद्ध उच्चारण पर विशेष बल दिया गया है | इन मंदिर स्थापत्य की दृष्ठि से एक विशेष परिवर्तन दिखाई देता है मंदिरों में प्रवेश द्वार के ऊपर की आकृति दो लघु शिखर तथा उनके बीच में अर्धवृत्ताकार अलंकृत आकृति अन्य स्थलों के मंदिरों से सर्वथा भिन्न है|

पाठक, एस. पी. (2014): ने अपने अध्ययन *बुंदेलखंड के जैन मंदिर: सांस्कृतिक अध्ययन* में पाया की बुंदेलखंड क्षेत्र में देवगढ़, चांदपुर-जहाजपुर, मदनपुर, ललितपुर, झांसी, खजुराहो, सोनागिरी जैन मंदिरों और मूर्तियों के केंद्र स्थल है| इनका निर्माण काल गुप्त काल से उत्तर मुगल काल तक होता रहा था| देवगढ़ मंदिर संख्या 12 के महामंडप से प्राप्त एक अभिलेख की लिपि मौर्यकालीन दाहिनी भित्ति से पर्याप्त समानता रखती है| इसी प्रकार पावागिरी की बावड़ी की खुदायी में प्राप्त एक तीर्थंकर मूर्ति पर

संवत 299 अंकित है| यह उदाहरण इस बात के प्रमाण है कि यहां गुप्त काल में जैन मंदिर और मूर्तियों के निर्माण हुए थे | चंदेल काल में इस क्षेत्र में सर्वाधिक मंदिर व मूर्तियां निर्मित हुई थी| बुंदेलों के समय में भी कई मूर्तियां एवं मन्दिर बनी थी|

2.3 शोध से सम्बन्धित निष्कर्ष

शोधकर्त्री ने वर्तमान अध्ययन से सम्बन्धित पिछले शोध अध्ययनों की समीक्षा की है| इनमें कुछ सामचार पत्रों तथा शोध अध्ययनो से जानकारी प्राप्त की | सम्बन्धित अध्ययनों की समीक्षा से पता चलता है कि भारत में महोबा नगर की ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित अध्ययनों की संख्या बहुत कम है| शोधार्थी ने आल्हा ऊदल, प्राचीन विरासत के संरक्षण की समाज की जिम्मेदारी महत्वपूर्ण है से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त की साथ ही शोध से संबंधित बुंदेलखंड में पर्यटन विकास नियोजन कालिंजर के विशेष संदर्भ में तथा बुंदेलखंड के वैष्णो मंदिर एवं जैन मंदिरों का अध्ययन किया इसके अलावा बुंदेलखंड के दुर्गों का ऐतिहासिक अध्ययन किया | निम्नांकित अध्ययनो के उपरान्त शोधार्थी ने **"स्नातक स्तर पर महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता का अध्ययन"** को वर्तमान में आवश्यक मानते हुए शोध अध्यन करना उचित समझा प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों में ऐतिहासिक विरासतों के सरक्षण के प्रति समझ विकसित करने में मदद करेगा|

अध्याय तृतीय

3.1 महोबा नगर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

बुंदेलखंड विन्ध्याचल की उपव्यकाओं का प्रदेश है| बुंदेलखंड भारत का हृदय स्थल है और जनपद महोबा, हमीरपुर उत्तर प्रदेश के दक्षिण भाग का एक अंग है जो ब्रिटिश शासन काल का सीमांकन है| अब यह लगभग समानान्तर चतुर्भुज के रूप में 7192 कि. मी. के क्षेत्र में उत्तर प्रदेश के 11 वें स्थान पर विस्तृत है| विंध्य पर्वत की श्रंखलाओं के विचित्र और मनोरम पर्वतों, झीलों, नदी-नालों, वनों विभिन्न प्रकार के भूखंडों को संजोये अपनी नैसर्गिक प्राकृतिक छटा से यह भूभाग आकर्षण का केंद्र प्राचीन काल से ही बना चला आ रहा है|

वर्तमान महोबा इस क्षेत्र की सदैव की राजधानी रहा है| इसका इतिहास रामायण- महाभारत काल से जुड़ा है जब इसे कैकेयपुर और कालांतर में पाटनपुर भी कहा जाता रहा है| श्रृंगीऋषि का आश्रम जनपद के ग्राम खरेला के समीप होने से इसे रामायण काल के कैकेयपुर से जुड़ते हैं| राम-सीता अपने वनवास काल में अवश्य इस क्षेत्र को सुशोभित करते रहे हैं| हां महाभारत काल में इसका नाम पाटनपुर अवश्य रहा होगा क्योंकि इस नगर में 7-8 फीट की गहराई तक खोदने से पाटव सर्वत्र मिलता है| जनपद में बेतवा नदी के सुरम्य तट वेदव्यास की प्रणयस्थली, पांडवों के निर्वासन काल की शरणस्थली - वैराठपुरी (राठ) और पांडवपुरी (पनवाड़ी) महाभारत काल से जुड़े हुए हैं|

मध्य युग के प्रारंभ में यह क्षेत्र गोंड राजाओं के आधिपत्य में रहा और हर्ष साम्राज्य के अवसान पर 7वी- 8वीं शताब्दी के मध्य विभिन्न नागवंश, ब्राह्मण, प्रतिहार, चंदेल और भार राजाओं का अभ्युदय हुआ जिन्होंने उचित समय पर पाकर अपने को स्वतंत्र घोषित कर स्वाधीनता का शंख बजाया| चंदेल वंश उन्हीं में से एक है| चंदेलों का राजत्व काल 9वीं-12वीं ई. तक प्रमुख रहा है| उन्होंने ही अपनी राजधानी में महोत्सव के निरंतर आयोजन होते रहने के फलस्वरुप इसका नाम

'महोत्सव नगर' रखा| चंद्रवरदाई ने पृथ्वीराज रासो में इसे *'महोतस'* व जैन मुनि राज-राजेश्वर व जय- विजय ने जैन ग्रंथों में *'महोबक'* का उल्लेख किया है तथा दक्षिण के चोल राजाओं ने इस *'महोदय'* का नाम दिया| कालांतर में अपभ्रंश होते-होते यह नाम महोबा पड़ गया|

मध्य युग के चंदेलों का यह राज्यकाल भारत के इतिहास में अपनी शौर्यमयी गाथाओं, दुर्ग विन्यास, वास्तुकी, संस्कृति और मूर्तिकला क्षेत्र में चरम सीमा तक पहुंचने के कारण अपना विशिष्ट स्थान रखता है और आज भी विश्व का आकर्षण केंद्र बना हुआ है| मानव जीवन की मूर्तिमयी झांकी को पाषाण जैसी कठोर वस्तु में सजीव रूप देने वाले धार्मिक स्थल "खजुराहो" है | अजेय दुर्गों में भगवान नीलकंठेश्वर को मस्तक पर सुशोभित किए सामरिक 'कालिंजर' और सौंदर्य रचना में इंद्रपुरी के समान शोभायमान राजनैतिक, **'महोबा'** इन्हीं चंदेल नरेशों की कर्मभूमि रहा है| इस काल का धार्मिक समन्वय अनुपम है जहां ब्राह्मण, जैन, बौद्ध, शैव, शाक्त तथा अन्य मतावलंबी समानांतर रुप से पल्लवित और पुष्पित होकर जनमानस को सही जीवन व्यतीत करने का मार्गदर्शन देते रहे हैं| महोबा को ऐसे वैभवशाली साम्राज्य की गरिमामयी राजधानी बनने का गौरव प्राप्त है| इसकी संपन्नता नगर नियोजन और पार्श्व तथा विभिन्न पर्वत दुर्गों व उनमें निर्मित राजा प्रसादों और सरोवरों के मध्य व तट पर बने भव्य मठों, मंदिरों तथा बैठकों की रचना का सौंदर्य वर्णन से परे है|

उपरोक्त वर्णित वैभव और संपन्नता से उत्कृष्ट होकर मुस्लिम आक्रमण कारियों ने अपना मन सदैव इस पर विजय प्राप्त करने हेतु केंद्रित किया उन्होंने 13वी से 15वीं शताब्दी तक समय-समय पर निरंतर आक्रमण कर इस क्षेत्र को ना केवल लूटा वरन ऐतिहासिक स्मारकों, मंदिरों व मठों में प्रतिष्ठापित मूर्तियों का विलक्षण कला-कृतियों का भी एक-एक कर जो विध्वंस किया ऐसी पाश्विकता और बर्बरता का विश्व में उदाहरण नहीं मिलता|

1995 से पहले हमीरपुर जिला के अन्तर्गत महोबा तहसील थी जिसे मा0 मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव जी ने 11 फरवरी 1995 को जनपद हमीरपुर से अलग कर के महोबा को पूर्ण

जिला बनाया। इसका कुल क्षेत्रफल 2884 वर्ग किलोमीटर है, तथा इसके अन्तर्गत तीन तहसीलें (महोबा, चरखारी, कुलपहाड़) और चार ब्लाक (कबरई, चरखारी, जैतपुर, पनवाड़ी) आते है।

3.2 महोबा नगर की भौगौलिक स्थिति

महोबा उत्तर प्रदेश के दक्षिण में तथा मध्य प्रदेश के उत्तर में स्थित है। यह झांसी से 140 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है| महोबा की स्थिति 25.28°N 79.87°E पर है। यहां की औसत ऊंचाई 214 मीटर (702 फीट) है। । पहाड़, नदी, मैदान, वन, पठार, जलवायु आदि भूगोल के अभिन्न अंग हैं। इनके आधार पर ही भौगोलिक प्रदेश विभाजित किए जाते हैं। महोबा का अधिकांश भाग पठारी है। जिले की भौगोलिक विषमता के आधार पर इसे चार भागों मे बांटा गया है। उत्तर का मैदानी भाग, पठारी भाग, पर्वतीय क्षेत्र, वन्य क्षेत्र| **उत्तर का मैदानी** भाग महोबा जिले का उत्तर- पूर्वी भाग इसके अंतर्गत आता है। कबरई एवं चरखारी उत्तरी भाग मैदानी हैं। **पठारी भाग** कबरई एवं चरखारी विकास खण्ड के उत्तरी भाग को छोड़ कर पूरे महोबा का धरातल पठारी है। पठारी भाग के अंतर्गत महोबा का 80 प्रतिशत भाग आता है। **पर्वतीय क्षेत्र** इसके अधीन पनवाड़ी, जैतपुर एवं दक्षिणी कबरई के क्षेत्र आते हैं। कुलपहाड़, अजनर, नौगांव, धुवनी प्रमुख पर्वतीय केन्द्र हैं। इस भाग में विन्ध्याचल की छोटी-छोटी पहाड़ियां फैली हैं। **वन्य क्षेत्र** बेला ताल एवं कबरई बांध का मध्य भाग मुख्य रूप से वन क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

महोबा जिले में प्रमुख रूप से तीन मौसम या ऋतुएं होती हैं। **शीत ऋतु, ग्रीष्म ऋतु, वर्षा ऋतु** महोबा जिले में शीत ऋतु अक्टूबर से फरवरी तक रहती है। कभी-कभी तापमान 4.6 डिग्री तक गिर जाता है। पाला पड़ने से फसलें क्षतिग्रस्त हो जाती हैं। ग्रीष्म ऋतु मार्च से जून तक रहती है। इस ऋतु में गर्मी ज्यादा पड़ती है तथा लू चलती है। ग्रीष्म ऋतु में पानी का अभाव हो जाता है। सन् 2001 में तापमान 48 डिग्री सेंटीग्रेड तक रिकार्ड किया गया। जिले में जुलाई, अगस्त एवं सितम्बर के तीन

महीनें वर्षा ऋतु माने जाते हैं। इस समय वातावरण हरा-भरा एवं मनोहर हो जाता है। मानसूनी वर्षा होने के कारण कभी अनावृष्टि तो कभी अतिवृष्टि से संकट पड़ जाता है। जिले की वर्षा 40 इंच है।

महोबा की लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या खेती के काम में लगी हुई है। खेती वर्षा पर निर्भर है एवं वर्षा मानसून पर। महोबा में वर्षा का अभाव कभी-कभी कृषि को नष्ट कर देता है जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर हो जाती है। गर्मी अधिक पड़ने के कारण लोग सूती वस्त्रों एवं साफी का विशेष रूप से प्रयोग करते है। धूल भरी आंधी और लू जन सामान्य को बेचैन कर देता है। जनपद के अनेक कुएं, तालाब सूख जाते हैं। पशु-पक्षी पानी की कमी एवं गर्मी की अधिकता से प्यास से व्याकुल होकर अपनी जान दे देते हैं। मनुष्यों के लिए भी पेयजल की समस्या खड़ी हो जाती है। पानी की कमी से पेड़ पौधे सूख जाते हैं। महोबा जिले में जाड़ा सामान्य पड़ता है। परन्तु कभी-कभी ठंड एवं पाला पड़ता है। पाला के प्रभाव से फसलें नष्ट हो जाती हैं। जलवायु का असर यहां की वनस्पति एवं कृषि पर भी पड़ता है। महोबा में मौसम का सर्वाधिक प्रभाव पान की खेती पर पड़ता है। महोबा नगर की भौगोलिक स्थिति को मानचित्र की सहायता से स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है -
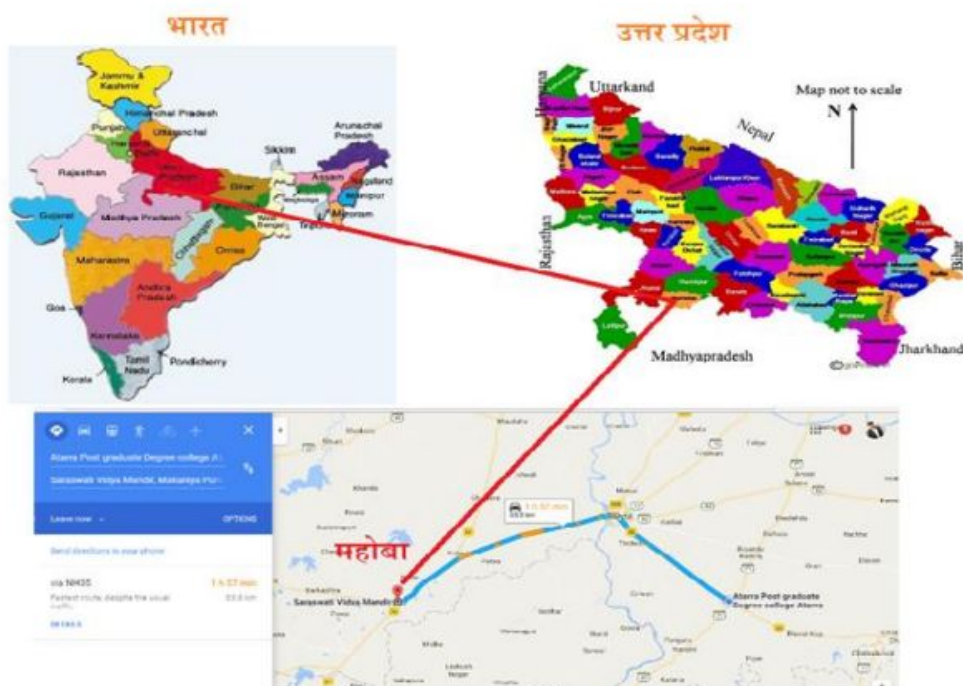
3.3 महोबा नगर की ऐतिहासिक विरासत

3.3.1 आल्हा-ऊदल

आल्हा और ऊदल दो भाई थे। ये बुन्देलखण्ड (महोबा) के वीर योद्धा थे। इनकी वीरता की कहानी आज भी उत्तर-भारत के गाँव-गाँव में गायी जाती है। जगनिक ने आल्ह-खण्ड नामक एक काव्य रचा था उसमें इन वीरों की गाथा वर्णित है। पं० ललिता प्रसाद मिश्र ने अपने ग्रन्थ आल्हखण्ड की भूमिका में आल्हा को युधिष्ठिर और ऊदल को भीम का साक्षात अवतार बताते हुए लिखा है - "यह दोनों वीर अवतारी होने के कारण अतुल पराक्रमी थे। ये प्राय: 12 वीं विक्रमीय शताब्दी में पैदा हुए और 13वीं शताब्दी के पुर्वार्द्ध तक अमानुषी पराक्रम दिखाते हुए वीरगति को प्राप्त हो गये। ऐसा प्रचलित है की ऊदल की पृथ्वीराज चौहान द्वारा हत्या के पश्चात आल्हा ने संन्यास ले लिया और जो आज तक अमर है और गुरु गोरखनाथ के आदेश से आल्हा ने पृथ्वीराज को जीवनदान दे दिया था, पृथ्वीराज चौहान के परम मित्र संजम भी महोबा की इसी लड़ाई में आल्हा उदल के सेनापति बलभद्र जो कान्यकुब्ज और कश्यप गोत्र के थे उनके द्वारा मारा गया था वह शताब्दी वीरों की सदी कही जा

सकती है और उस समय की अलौकिक वीरगाथाओं को तब से गाते हम लोग चले आते हैं। आज भी कायर तक उन्हें (आल्हा) सुनकर जोश में भर अनेकों साहस के काम कर डालते हैं।

ऊदल का जन्म 12 वी सदी में जेठ दशमी दशहरा के दिन दसपुरवा महोबा में हुआ था इनके पिता देशराज थे जिन्हें जम्बे भी कहा गया है (1142-1160) माडोगढ़ (वर्तमान मांडू) जो नर्मदा नदी के किनारे मध्य प्रदेश स्थित है के पुत्र कीर्तवर्मनके द्वारा युद्ध में मारे गये थे जिनकी मा का नाम देवल था जो अहीर यादव जाति के थी बड़ी बहादुर और ज्ञानी महिला थी जिनकी मृत्यु पर आल्हा ने विलाप करते हुए कहा कि "मैय्या देवे सी ना मिलिहै भैया न मिले वीर मलखान पीठ परन तो उदय सिंह है जिन जग जीत लई किरपान" राजा परिमाल की रानी मल्हना ने ऊदल का पालन पोषण पुत्र की तरह किया इनका नाम उदय सिंह रखा ऊदल बचपन से ही युद्ध के प्रति उन्मत्त रहता था इसलिए आल्हखण्ड में लिखा है "कलहा पूत देवल क्यार " अस्तु जब उदल का जन्म हुआ उस समय का वृत्तान्त आल्ह खण्ड में दिया है जब ज्योतिषों ने बताया।

3.3.1.1 आल्हा-ऊदल व उनका अखाड़ा:

यह अखाड़ा महोबा-चरखारी बाईपास मार्ग पर अंत में दाईं ओर (बौद्ध मठ के समीप) कीरत सागर के पश्चिम में नीचे स्थित है। यह एक साधारण सा टीला मात्र है। जनश्रुति के अनुसार यह चंदेल काल में एक अखाड़े के रूप में प्रयुक्त होता था जहां पर परिमार्द कालीन आल्हा- उदल जैसे किशोर वीर सैन्य प्रशिक्षण पाते थे | आल्हा ऊदल की शौर्य गाथाओं के इतिहास से ही मुख्यत: लोग महोबा को जानते हैं। अतः इनकी कुछ जानकारी देना यह परंपरा संगीत होगा।

कालिंजर के समीप कोहरी ग्राम में दक्षिण की ओर नदी के तट पर नंदन नाम का एक टीला है जहां द्योसर देव (दोसर देव) नाम के एक प्रख्यात बनाफर निवास करते थे। यही दोसर देव आल्हा-ऊदल के पूर्वज थे। जनश्रुतियों के अनुसार दोसर देव एक दिन नदी स्नान करने जा रहे थे कि मार्ग में एक सुंदर अहीरिन बाला अपने सिर व बगल में जल से भरे कई घड़े रखे नदी से लौट रही थी जो मार्ग

में दो जंगली भैंसों के लड़ने के कारण रुकी थी| वहां मार्ग अवरुद्ध होने पर उसने घड़ों को रखकर उन दोनों भैसों के सींग पकड़कर हटा दिया| दोसर देव उसके इस वीरतापूर्ण दृश्य से अधिक प्रभावित हुए | पूछने पर उसका नाम "कोइली" बात ज्ञात हुआ| नित्य क्रिया से निवृत होकर दोसर देव उसके पिता के यहां गए और कोइली के दांपत्य सूत्र में बंधने का प्रस्ताव रखा जिसे इसकी स्वीकृति मिली| इस दंपति से दस्य राज और बच्छराज नामक 2 स्वस्थ्य उदयीमान बालक उत्पन्न हुए जो दोसर देव के अनुरूप स्वस्थ व धनुष विद्या में प्रवीण, वन में विचरण कर आखेट किया करते थे| परिमार्द नरेश के समीपवर्ती वनों में आखेट के दौरान दोसर देव के पुत्रों से भेंट हुई| तथ्य यह है कि नरेश एक बार बाघ के आखेट हेतु इस वन में हंकारा कर रहे थे| आखेट के दौरान बाघ दोसर देव के आश्रम की ओर भागा जहां दस्सराज और बच्छराज खड़े थे| बाघ को आते देख दोनों ने पत्थरों व डंडों से घायल कर गिराते हुए मार दिया पीछे से परिमर्द नरेश आ पहुंचे और इन दोनों की वीरता से आकर्षित हुए|

उन दोनों के इस निर्भीक कृत्यों तथा सुडोल स्वस्थ शरीर रचना में परिमर्द आकर्षित हुए और दोसर देव की सहमति से उन्हें महोबा ले आए| महोबा में उनका व्यक्तित्व बढ़ा और कालांतर में जिगनी के राजा मल्लि परिहार (माहिल) की दो छोटी बहनों का विवाह इन वीरों से हो गया| बड़ी बहन देवल देवी का विवाह दस्सराज से तथा छोटी बहन जसखान देवी का विवाह बच्छराज से हुआ| इससे पूर्व ही माहिल की सबसे बड़ी बहन मल्हना देवी का स्वयं परिमार्द से विवाह हो चुका था और चौथी बहन अगमा का विवाह दिल्ली के राजवंश में हुआ था| कालांतर में दस्सराज से आल्हा-ऊदल तथा बच्छराज से मलखान-सुलखान आदि वीर उत्पन्न हुए| परिमर्द ने महोबा के समीप दशपुरवा में उन्हें जागीर देकर सरोवर के तट पर रहने की व्यवस्था कराई| यही सरोवर दिसरापुर के नाम से जाना जाता है जहां अब आल्हा ऊदल के महलों के कोई अवशेष नहीं बचे |

दूसरी जनश्रुति के अनुसार दस्सराज बच्छराज का दृष्टांत दूसरे प्रकार का है| कहा जाता है कि दस्सराज व बच्छराज बनाफर बिहार से काशी आए थे जहां उनका झगड़ा घोड़ों की खरीद के समय किसी से हो गया था| उस द्वंद में अचानक उनकी भेंट चंदेल नरेश परिमर्द से हुई बनाफर बंधुओं के

शौर्य से परिमर्द प्रभावित होकर उन्हें महोबा ले आए और उन्हें दसपुरवा की जागीर दी गई| कालांतर में वह सेनानी परिमर्द के मंत्री पद पर भी सुशोभित होते रहे|

यही दोनों भाइयों से आल्हा-ऊदल और मलखान-सुलखान आदि वीर उत्पन्न हुए यही वीरवर उक्त वर्णित अखाड़ों में मल्लयुद्ध, धनुष-बाण, तलवार, अश्वरोहण, सांग आदि का अस्त्र-शस्त्र विद्या में ताला सैयद जैसे गुरुद्वारों के सानिध्य में रहकर परमवीर योद्धाओं के रूप में विकसित हुए| उन्हें गुरु गोरखनाथ व मैहर की शारदा देवी द्वारा आशीष रूप से कुछ आयुध भी प्राप्त हुए थे| इसी केंद्र से उदल ने आश्वरोहण में प्रवीणता पाकर गुरु गोरखनाथ की कृपा से बुंदेला जैसे वेगवान घोड़े प्राप्त कर अनेक युद्ध जीते |परिमर्द के राज्यकाल में आल्हा उदल जैसे रण बांकुरों के सेनापतित्व में 52 सैनिक अभियानों में विजयश्री अर्जित कि जिससे चंदेलों की ख्याति में वृद्धि हुई | सच पूछा जाए तो आल्हा ऊदल की ही शौर्य गाथाएं परिमर्द की कीर्ति पताका हैं | इन्हीं युद्धों की श्रृंखला में मांडव विजय आल्हा उदल की विशिष्ट विजय मानी जाती है जहां इन रणबांकुरों ने किशोरावस्था में मांडव नरेश करिंगा राय का, अपने पिता व चाचा का उसके द्वारा छल-कपट से वध किए जाने के प्रतिशोध में, सिर काटकर अपनी माताओं की इच्छा पूर्ति की थी|

3.3.2 शिव ताण्डव:

गोरखगिरी की पश्चिमी तलहटी में व् महोबा-छतरपुर बाईपास मार्ग पर बाईं ओर लगभग 150 मीटर दूरी पर स्थित यह भगवान शंकर की रौद्र रूप में नृत्य करती प्रस्तरीय प्रतिमा लगभग 15×14 वर्ग फीट है जो 8वें चंदेल नरेश धंग की समयाकलिन है | इसका निर्माण 10 वीं शताब्दी में बतलाया जाता है|

उत्तर भारत में यह 10 भुजी प्रतिमा शिव श्रृंगार किए महाकाल के रौद्र रूप में विशाल गज को उठाए तांडव नृत्य करती रूपायती की गई है| यशस्वी मूर्तिकार ने कूर्म पुराण में वर्णित गजापुर-वध के उपरांत किए गए नृत्य का सफल- सजीव प्रस्तुतीकरण मूर्तिमय किया है|

आख्यान यह है कि दक्षिण में गजासुर नाम का एक दैत्य अपनी संहारक शक्ति से जनमानस को रौंद कर सृष्टि का नाश करने पर तुला हुआ था| दुखी भक्तगण अवधर दानी भगवान शंकर के पास आकर दुखड़ा रोए और उन्हें गजासुर का वध करने हेतु सहमत कर लिया |महाबलशाली सैकड़ों गजों की शक्ति धारण करने वाला दैत्य शंकर के घोर संग्राम तो करता रहा पर अंत में वह उनके त्रिशूल के घातक वार को सहन न कर वीरगति को प्राप्त हुआ| वध के उपरांत जब शिवशंकर कैलाश पहुंचे तो देवी पार्वती ने उनके शरीर पर श्रम बिंदुओं को देखकर गजापुर संग्राम का वृतांत पूछा और प्रार्थना की कि वह गजासुर से युद्ध में रत उस स्वरूप का दर्शन कराये | शिव सशर्त सहमत हुए कि यदि देवी पार्वती ताल दे सके तो वह उस संग्राम का दर्शन करा सकते हैं | अतः जब देवी ने ताल देना आरंभ किया तो शिव अपनी पूर्ण विकराल वेशभूषा में विविध आयुध धारण कर दैत्य गजासुर को अपनी बलिष्ठ भुजाओं पर उठाए नृत्य करने लगे| यहां महाकवि कालिदास वह भवभूत ने भी गज धर्मधारण कर शिव के नृत्य का वर्णन किया है|

यहां यह उल्लेखनीय है कि इस मूर्ति में गजासुर को गज के रुप में दर्शाया गया है| पर यदि ध्यान से देखें तो देवी चंडिका में भी ऊपर की ओर यह गज चिन्ह दर्शाया गया है | इससे विदित होता है कि गज चिन्ह को महाशक्ति के रूप में उनके आभामंडल में प्रतिष्ठित करने की मूर्तिकारों द्वारा अपनाई गई परिपाटी थी| उन्होंने शिव के श्रंगार को उनके वांछित आयुधों द्वारा अलंकृत किया है| दायी ओर देवी पार्वती ताल देती हुई रूपायित की गई हैं| इस स्थान को लगभग 10 वर्ष पूर्व सिद्ध बाबा भी कहा जाता रहा है | यह प्रतिमा आस्था का केंद्र बनी हुई है और प्रतिवर्ष यहां श्रावण पूर्णिमा के दूसरे दिन विशाल मेला लगता आ रहा है जिस की व्यवस्था नगर पालिका परिषद करती है| प्रतिमा के पश्चिम में गोरखगगिरि घाटी का जलप्रपात और जड़ी बूटियों से हरा-भरा प्राकृतिक सौंदर्य तथा

पर्यावरण सैलानियों को पिकनिक के लिए लालसा जागृत करता है| इसी के दाई ओर एक विशाल सती चिन्ह भी अंकित है|

शिव तांडव के दक्षिण में नीचे की ओर स्थित एक काल भैरव की मूर्ति है | यह ग्रेनाइट शिलाखंड पर उत्कीर्ण भैरव की प्रतिमा है जिसमें दायी ओर नीचे उनका वाहन श्वान (कुत्ता) दिखलाया गया है | इसे लोग *काल भैरव* कहते हैं पर श्वान तो धार्मिक ग्रंथों के अनुसार *बटुक भैरव* का वाहन है न कि काल भैरव का इस मूर्ति पट्ट पर तेल से पोते जाने की प्रथा चली आ रही है| इस पर बलि चढ़ाने की प्रथा अब समाप्त हो गयी है |

3.3.3 बड़ी चण्डिका

महोबा छतरपुर मार्ग पर दाईं ओर वीरभूमि राजकीय डिग्री कॉलेज के सामने मुख्य मार्ग से 300 मीटर दाहिनी ओर स्थित बड़ी चंडिका देवालय है | यह चंदेल वंश के संस्थापक यशस्वी चंद्रवर्मन ने अपने पिता चंद्रदेव के निर्देशन पर खजुराहो में यज्ञ के समापन पर सन 831 ई. में महोबा आकर एक विशाल महोत्सव आयोजित कर देवी शक्तिपीठ की स्थापना की थी जो एक 12 फुटी प्रस्तर शिला पर 18 भुजी उत्कीर्ण है इसकी प्रसिद्धि सिद्ध पीठ के रूप में जनमानस में व्याप्त है|
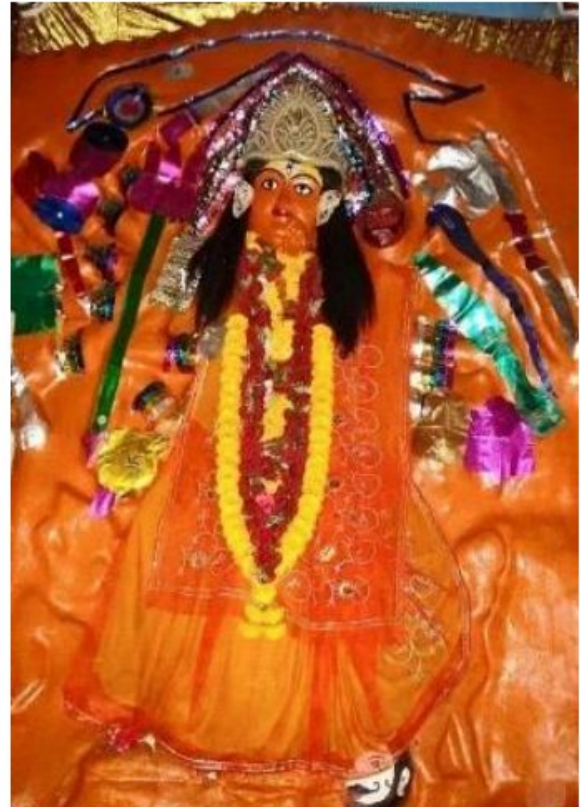
इसकी मान्यता दुर्ग व नगर रक्षा हेतु चौमुण्डा स्वरूप भी दक्षिण में स्थापित मानी जाती है | इस मूर्ति के सामने एक मान स्तंभ या दीप स्तंभ है जिसके पीछे गणेश को नृत्य मुद्रा में 3.5 ×5 वर्ग फीट की शिला पर स्थापित किया गया है जो बाद का है| चंदेलकालीन शिल्प कला में भक्त विंदेश्वर, तरुण गणपति, बाल गणेश, हेरम्य गणपति और प्रसन्न गणपति को राज्य प्रसादों, मठ मंदिरों, आवासों और दुर्गों के द्वारों पर प्रतिष्ठापित करने की प्रथा चल पड़ी थी| जैन मतावलंबियों ने भी इन्हें अपने देवालयों में स्थान दिया है| चंदेल काल में गणपति शिव परिवार के सदस्य माने गए हैं| अंत में गणपति को पूर्ण अलग से भी मान्यता मिली | नवरात्र के पर्व पर श्रद्धालुओं का प्रतिवर्ष यहां मेला सा लगा रहता है| महोत्सव नगर महोबा अपने विभिन्न नामों से प्राचीन काल में शिव शक्ति ,वैष्णव, जैन और बौद्ध धर्म का संगम रहा है| उनके मतावलंबियों ने राजाश्रय में रहकर समयानुसार अपने इष्टों को समीप में शिवकंठ, चंद्रमौली, पंचदेव प्रस्तर चौकी, पीछे गुफा में जैन तीर्थंकर और कंठेश्वर को मूर्ति के रूप देकर शाश्वत किया है|

पौराणिक कथाओं के अनुसार यह स्थान मदन सरोवर के समीप प्राकृतिक सौंदर्य में 'ताराचंडी' सिद्ध पीठ के रूप में स्थित है जिसे आज '**बड़ी चंडिका**' के नाम से ख्याति मिली है| इसकी स्थापना अति प्राचीन है जनश्रुतियों के आधार पर इसकी पहचान गढ़वाल नरेशों के समय 7वीं शताब्दी से में हुई| तदोपरांत आदि चंदेल नरेश चंद्रवर्मन ने खजुराहो में यज्ञ का समापन कर सन 831 ई. में महोबा आकर देवी को अपना इष्ट महान यज्ञ आहूत कर मूर्त रूप दिया| इन्हीं देवी के आशीष से चंदेलों का विजय अभियान प्रारंभ हुआ जो 400 वर्षों तक साम्राज्य विस्तार के रूप में चला| स्मरणीय है कि वीर आल्हा-ऊदल पर चंडिका की विशेष कृपा रही|

आख्यान यह है कि देवी शक्ति के 51 पीठों में देवी ताराचंडी भी एक है| श्री दुर्गा सप्तशती के अनुसार भयंकर दैत्य महिषासुर के प्रबल सेनापति चण्ड से देवी ताराशक्ति का उत्तराखंड में घोर संग्राम हुआ जिससे वह भागकर महोबा के इस स्थान पर द्वंद्व करता रहा | आयुध प्रहारों से भी वह क्यों नहीं मर रहा? इसका देवी को आश्चर्य हुआ मूर्तिकार ने देवी को 18 भुजाओं में से 17 विविध

आयुध धारण कर मूर्तरूप किया है | लेकिन मुखार बिंदु पर एक भुजा आश्चर्यरत रूपायित की है| अंत में देवी के घातक प्रहार से आहत होकर वह कैमूर विंध्य पर्वत श्रृंखला की ओर भागा जहां उसका वध हुआ| दैत्य चण्ड को चरणों तले दब कर तथा मुखारबिंदु के ऊपर विशाल गज को शक्ति का प्रतीक उत्कीर्ण कर रूपायित किया गया है |

13वीं शताब्दी के आरंभ में विदेशी आक्रमणों का सिलसिला आरंभ हुआ जिसमें बड़ी संख्या में यहां सैनिक वीरगति को प्राप्त होते रहे जिनकी विधवाओं ने सती के रूप में आत्मदाह किये है जिनके चिन्ह पीठ के समीप युगल व चंद्र-सूर्य और पंचतत्व रूप पूजा शिलाओं पर अंकित है| ऐसे वातावरण के चलते शक्तिपीठ स्थल पर वीरानगी छायी रही |

बुंदेल नरेशों ने इस पर ध्यान देकर प्रकाश एवं पूजन की समुचित व्यवस्था की जो लंबे समय तक चलती रही| फिर छतरपुर नरेश विश्वनाथ सिंह और उनके कुंवर भवानी सिंह ने रख-रखाव कर द्वार का जीर्णोद्वार कराया जिससे जनमानस को नवरात्रों में आवागमन होता रहा| बीसवीं शताब्दी के अंत में श्री बलिहारी उपाध्याय ने यहां आजमगढ़ से आकर पुजारी के रूप में सन 1954 से योगदान देकर पुनः जनमानस में जागरण कर ख्याति दिलायी तब से शक्तिपीठ के विस्तार, रख-रखाव, सौंदर्यीकरण तथा निर्माण में भक्तों की होड़ लग गई जिसका शुभारंभ श्री गंगा चरण राजपूत तत्कालीन सांसद ने किया| आजकल यहां भक्तों का सदैव मेला सा लगा रहता है और देवी उनकी कामनाएं पूर्ण करती हैं|

3.3.4 छोटी चंडिका (महिषासुर मर्दनी)

यह देवी स्थान गोरखगिरी की पूर्व दिशा में राठ रोड व पुलिस लाइन के संपर्क मार्ग के मध्य वह मदन सागर के पश्चिम में स्थित है | इस 18 भुजी देवी स्थल को जनमानस **'छोटी चंडिका'** के नाम से जानता है यह विग्रह वास्तव में महिषासुर मर्दनी का है जिसका पौराणिक इतिहास है| चंदेल

नरेश मदन वर्मन (1129-1163) ने स्थानीय मगरिया नदी पर बांध बनाने का निर्माण कार्य प्रारंभ किया जो नदी के जल वेग से बार-बार टूट जाता था | विद्वान ज्योतिष आचार्यों ने चंदेल नरेश को महिषासुर मर्दनी का आवाहन कर देवी के विग्रह को प्रतिस्थापित करने का परामर्श दिया| तदनुसार देवी की प्रतिष्ठापना आदि देवों के द्वारा 18 शास्त्रों का धारण किए महिषासुर को अपने अलौकिक पराक्रम में बंद कर चरणों से रौंदते हुए रूपायित हुई | फिर मगरिया नदी पर बांध का निर्माण सफल हुआ जिससे देवी के सम्मुख सरोवर मदन ब्रह्मा के नाम पर 'मदन सागर' हिलोरे लेने लगा|

इस मदन सागर में मगरिया नदी की मुख्यधारा के ऊपर द्वार को 'महिषासुर' द्वारा घोषित किया गया जो बाद में महोबा का दुर्गद्वार बन गया| इस के उपलक्ष में यहां प्रतिवर्ष महिसा (भैंसा) की बलि चढ़ाने की प्रथा चल पड़ी जो लंबे अंतराल के बाद समाप्त हुई| यही महिषासुर द्वारा ही अपभ्रंश होकर भैसासुर द्वार के नाम से प्रचलित हो गया| देवी का नाम महिषासुर मर्दनी हो गया जो लगभग एक शताब्दी से छोटी चंडिका के नाम से कहा जाने लगा| तभी से यह स्थान कुछ वीरानगी में आ गया था और कुछ भक्त ही पूजा करने आते-जाते थे| लेकिन नगर के कुछ भक्तों ने यहां विकास को गति दी फिर वर्ष 2010-11 में उदयीमान निष्ठावंत SDM श्री ब्रजराज यादव पीसीएस ने जन सहयोग से इस देवी स्थान को भव्य रुप प्रदान किया जिससे भक्तों की भीड़ होने लगी इस स्थान को बड़ी चण्डिका के मार्ग पर जोर दिया गया| यह शक्तिपीठ सबकी मनोकामनाएं पूर्ण करती है|

पौराणिक कथाओं पर आधारित मार्कंडेय पुराण के अनुसार प्राचीन काल में कश्यप ऋषि पुत्र रम्भ–करम्भ नाम के दैत्य पाताल लोक (सुतल) के स्वामी थे जो भूमंडल पर विचरण करते देवताओं से शत्रुता रखते थे| उनके कोई संतान न थी जिससे वह दुखी थे| इनकी घोर तपस्या के उपरांत ब्रह्मा के वरदान से संयोगवश रम्भ–करम्भ द्वारा महिषी (भैस) संसर्ग के परिणाम स्वरुप महिषासुर का जन्म हुआ| यह भीमकाय महाबली विभिन्न रूप धारण करने वाला देवताओं को पराजित कर कष्ट देने लगा जिससे त्राहि-त्राहि मच गई| तदुपरांत महाबली असुर दैत्य ने इन्द्रासन लेने हेतु विशाल सेना लेकर इंद्र पर आक्रमण कर दिया | इस तरह देव नायक इंद्र असुर स्वामी महिषासुर के बीच घोर युद्ध छिड़ गया

जिसमें देव सेना परास्त हुई| देवगढ़ ब्रह्मा जी को लेकर शिव और विष्णु के पास गए और दैत्य के नाच का उपाय पूछा तभी सभी देवताओं के मुख से एक ज्वाला निकली यही संपूर्ण तेज सभी अंगो सहित नारी रूप में परिणित हो गए| उन सभी आदि एवं अन्य देवताओं के 18 अलौकिक अजेय शस्त्रों से उनके कर कमलों को सुसज्जित किया| महिषासुर से घोर युद्ध हुआ जिसमें सभी सेनापति वीरगति को प्राप्त हुए| अंत में फिर महिषासुर सभी अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित हो देवी से घोर युद्ध करने लगा| इस पर देवी ने अपने अलौकिक पराक्रम से उसका वध अपने चरणों के नीचे दबा दिया |इसी आख्यान के आधार पर महिषासुर मर्दनी का विग्रह रूपायित किया गया जिसे लोग छोटी चंडिका कहने लगे थे |

3.3.5 मनिया देवी

मनिया देवी एक प्राचीन मढिया में प्रांगण को सुशोभित करती हुई विराजी है| यह वही स्थान है जहां चंदेल वंश के आदि देवचंद्र बर्मन व माता सुंदरी हेमावती को आश्रय मिला था | इन्हीं देवी के आशीष से उनका समृद्धि मार्ग प्रशस्त हुआ था | मनिया देवी गौंड राजाओ की कुलदेवी थी जिन्हें चंदेलों ने भी उसी सम्मान व श्रद्धा तथा विश्वास के साथ पूज्यनीय माना था| आदि नरेश चंद्रवर्मन का शैशव काल इन्हीं कुलदेवी की छाया में प्रभावशाली ढंग से विकसित हुआ| इस मढ़िया की प्राचीनता असंदिग्ध है क्योंकि यह निशाब व बलुआ पत्थरों की ईटों से एक विशाल प्रस्तर खंड के नीचे देवी को प्रतिष्ठित कराकर निर्मित की गई है | यह मढ़िया 16 × 16 वर्ग फुट के क्षेत्र में लगभग 20 फुट ऊंची निर्मित है जिसकी तीन द्वार पूर्वाभिमुख वह एक-एक द्वार उत्तर दक्षिण दिशा में है पश्चिम में पाषाण खंड व मढ़िया को एक विशाल वटवृक्ष ने इसे अपनी गोद में समेट रखा इसमें मनिया देवी की तो खंडित रूप से सिर विहीन प्रतिमा है पर यहां के लोगों का कहना है कि यह मूर्ति परम सुंदर व खंडग धारण किए वरदायिनी मुद्रा में थी जनरल कनिंघम का भी मत ऐसा है| इस मूर्ति का खंड व विस्थापन अज्ञात है इस देवी पीठ को स्थानीय लोग 'भौरा दोहे की कालका' भी कहते हैं| भोले- भाले गोंड लोगों का मानना है कि चंदेल उनके पूर्वज थे| इससे स्पष्ट है कि चंदेलों का गोंडों से निकटतम संबंध था और

इतिहासकार भी इस मत के पक्षधर हैं| इस मढ़िया के चारों ओर प्रस्तर चहार दीवार भी है| इसके पीछे गौड़ कालीन बारादरी के समान एक सामरिक चौकी बनी हुई है|

3.3.6 विजय सागर

यह तालाब महोबा के पूर्वी अंचल में कानपुर मार्ग पर है, जिसका निर्माण राजा विजय वर्मा चन्देल (1040-50 ई.) ने कराया था। यह तालाब बहुत बड़ा तथा गहरा है। गहरा एवं विशाल होने के कारण इसे नौका विहार और स्वीमिंग पूल के रूप में पर्यटक झील का स्वरूप दिया जा सकता है। इसके बाँध पर प्राचीन बस्ती थी जिसके खंडहर अब भी देखे जाते हैं। बस्ती में बरगद के पेड़ थे जो अभी भी खड़े हुए हैं। सन 1855 ई. में अंग्रेज इंजीनियर बर्गेस ने इस तालाब के बाँध में सलूस बनवाकर, कृषि सिंचाई के लिये पानी निकालने का प्रबन्ध कर दिया था। तालाब के बाँध की बस्ती का नाम बीजा नगर कहा जाता था। इसी कारण इस तालाब को बीजा सागर भी कहा जाता रहा है।

3.3.7 कीरत सागर

यह तालाब चन्देल राजा कीर्ति वर्मा (1053-1100 ई.) ने बनवाया था, जो महोबा नगर के दक्षिणी पार्श्व में है। यह रेलवे स्टेशन के बाई ओर स्थित है | इसका बाँध तेलिया पत्थर की पैरियों से बना है। यह विशाल तालाब है, जिसका जल सदा निर्मल एवं स्वच्छ रहता है। इस तालाब में कमल पैदा होता है। इसका भराव क्षेत्र 2 किलोमीटर है। इस तालाब को स्थानीय लोग किरतुआ तालाब भी कहते रहे हैं जिसमें चन्देल राजघराने की बहू-बेटियाँ अपनी सखियों सहित श्रावण मास की प्रतिपदा को कजलियाँ विसर्जित करने समारोह पूर्वक जाया करती थीं। परमाल राजा के शासनकाल में सन 1182 ई. में पृथ्वीराज चौहान ने चन्देल राज्य महोबा पर आक्रमण करते हुए, कजलियाँ विसर्जन के अवसर पर चन्देल राजकुमारी चंद्रावल के अपहरण हेतु इसी तालाब पर युद्ध लड़ा था, जिसमें चन्देलों की ओर से आल्हा-ऊदल ने शौर्यपूर्वक मुकाबला कर पृथ्वीराज चौहान की सेना को पराजित कर महोबा से खदेड़ दिया था।

कीरत सागर ऐतिहासिक तालाब है। इसके बाँध के पीछे एक मुरमीली पहाड़ी है जिसके शिखर पर दो समाधियाँ बनी हुई हैं, जो ताला सैयद एवं झालन की कही जाती हैं। ताला सैयद एवं झालन आल्हा ऊदल के सहयोगी एवं सहायक थे। यहीं पर आल्हा की बैठक बनी हुई है जो तेलिया पत्थर की पटियों (चीरों) से बनी है।

3.3.8 कजलियों का मेला

कजलिया क्या है? यह एक कृषक प्रथा है जिसमें किसान ढाक-पत्र में मिट्टी भरकर गेहूं बोकर यह अनुमान लगाते हैं कि आगामी फसल आएगी वह कैसी होगी? यदि बोया गया गेहूं जो अच्छा जमा तो फसल अच्छी होगी अन्यथा नहीं| यह उगे हुए बीच कजलिया कहलाते हैं जो लगभग 9 -10 इंच तक बढ़ जाते हैं| यह कजरिया बोने की प्रथा चंदेल नरेश कीर्तिवर्धन के राजकाल (1060-1190) से प्रारंभ होना बताते हैं| जब उन्होंने कीरत सागर सरोवर का निर्माण कराया था| उन कजरियों का रोपण श्रावण अमावस्या के दिन होता है और उसे श्रावण पूर्णिमा में रक्षाबंधन के दिन महिलाएं खोंटकर सरोवर में महोत्सव मना कर विसर्जित करती हैं| उस समय महोबा में नगर की महिलाओं के साथ राजवंश की महिलाएं वह स्वयं रानी व राजकुमारियां भी इस विसर्जन महोत्सव में भाग लेती थी| तभी से इस कजरियों के मेला की प्रथा चल पड़ी|

अब इसने एक विशाल मेले का सांस्कृतिक रूप 'आल्हा महोत्सव' के नाम से हो गया इस महोत्सव में आल्हा गायन, विभिन्न झांकियां, अखाड़ा दंगल, नृत्य व विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित होती हैं| कजरी मेले का प्रारंभ हवेली दरवाजे के शहीद स्थल से आरंभ होता है जिसे कीरत सागर के तट कजरियों का विसर्जन आल्हा ऊदल की याद में विजय पर्व के रूप में किया जाता है| इस मेले को नई दिशा में भव्य रूप देने में तत्कालीन जिला मजिस्ट्रेट डॉ. काजल आईएएस ने विशेष योगदान किया जिसे और भी बढ़ाकर श्री अनुज कुमार झा आईएएस जिला मजिस्ट्रेट ने कीर्तिमान स्थापित किया| साथ ही कीरत सागर के निर्मलीकरण में उन्होंने जन सहयोग को लेकर जलकुंभी को

तालाब से नष्ट कराते हुए इसके सौंदर्यीकरण की योजना बनाई जो एक ऐतिहासिक कार्य रहा| इसी तारतम्य में सागर बांध पर 'आल्हा मंच' के संरक्षक श्री शरद तिवारी 'दाऊ' विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से मेले को आकर्षक बनाए रखते हैं|

वर्षाकालीन यह कजरिया मेला चंदेल -चौहान युद्ध की स्मृति में विशेष रूप में मनाया जाता है| जब परमाल पुत्र ब्रह्मा व पृथ्वीराज की पुत्री बेला के विवाह संबंधी डोला लाने के समय दोनों राजाओं की ओर से महोबा में विवाह संबंधी युद्ध छिड़ गया था जिससे पूर्णिमा के दिन कजलियों का विसर्जन युद्ध के कारण न हो सका और अगले माह मास में के पहले दिन ही धूमधाम से हो सका था| इस डोला कांड में पृथ्वीराज को पराजित होना पड़ा था जिससे वह चंदेलों से बदले की भावना रखने लगा था|

उरई नरेश माहिल की कूटनीति तथा पृथ्वीराज के सामंत से महोबा में कहीं से डोला ले जाते समय कीरत सागर के बाग में चंदेल सैनिकों की भिड़ंत से आहत सुनकर पृथ्वीराज को बदले की भावना और बढ़ गई जिससे पृथ्वीराज ने 1182 ईस्वी में विशाल सेना लेकर महोबा पर आक्रमण कर दिया| भीषण युद्ध के दौरान चंदेल के सेनापति आल्हा उदल व अन्य शूरवीर ठीक समय से न आने के कारण चौहान सेना के आगे न टिक सके और भीषण युद्ध में दोनों ओर के शूरवीर मारे गए| परमाल का पराभव तो हुआ पर पृथ्वीराज चंद्रावल का डोला पारस पथरी व नौलखा हार आदि न ले सका|

इस मेले को प्रदेश के युवा मुख्यमंत्री माननीय अखिलेश यादव ने माह जून 2013 में यहां आगमन पर प्रदेश स्तर पर निबन्धित करने की घोषणा कर महोबा को गौरान्वित किया अब निश्चित रूप से इस मेले का आकार बढ़ेगा| इसकी स्मृति को सजीव रखने के लिए सावन मास की पूर्णिमा के बाद विशाल मेला हवेली दरवाजा शहीद स्थल से प्रारंभ होकर आयोजित होता है जो आल्हा-उदल की चौहान सेना पर विजय के प्रतीक स्वरुप है| सौ वर्ष पहले इस मेले में शिथिलता आने लगी थी जिसे यहां के तत्कालीन प्रमुख जागीरदार रायबहादुर शिवचरण लाल ने मेले को स्थायित्व प्रदान

किया| अब नगर पालिका इस मेले का आयोजन बड़े उत्साह और अनोखे ढंग से विविध झांकियां निकाल कर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का मंचन और विविध क्रीडा प्रतियोगिताये आयोजित करती है जो बुंदेलखंड भर में प्रसिद्ध है|

3.3.9 मदन सागर तालाब

मदन सागर तालाब, मदनवर्मा चन्देल (1129-1162) ने अपने नाम पर बनवाया था, जो महोबा नगर के दक्षिणी पार्श्व में स्थित है। इस तालाब का प्राकृतिक परिवेश अति रमणीक है। तालाब के बाँध पर अनेक प्राचीन प्रस्तर प्रतिमाएँ बिखरी हुई हैं। तालाब के उत्तरी-पश्चिमी भाग में एक उभरी पथरीली चर्र (पटपरिया) पर शिव मन्दर है, जिसे ककरामठ कहा जाता है। ककरामठ के पास ही एक सुन्दर बैठक थी, जिस पर बैठकर राजा सरोवर का सौंदर्य निहारा करते थे। ककरामठ के पास ही दूसरी चर्च पर विष्णु मन्दिर एवं बैठक थी जो वर्तमान में ध्वस्त हो चुके हैं।

मदन सागर तालाब से चन्देल राजाओं की ऐतिहासिकता जुड़ी हुई है। इस तालाब के उत्तरी पार्श्व की पहाड़ी पर चन्देलों का किला था, जिसके दो पश्चिमी एवं पूर्वी दरवाजे थे, जिन्हें क्रमशः भैंसा एवं दरीवा दरवाजे कहा जाता था। चन्देलों की आराध्य मनिया देवी का मन्दिर भी यहीं पर है। तालाब के दक्षिणी भाग में बड़ी चन्द्रिका देवी, शिव गुफा एवं काँठेश्वर शिव का मन्दिर है यहीं दक्षिणी-पूर्वी भाग में जैन अतिशय क्षेत्र है जिसके समीप छोटी चन्द्रिका देवी का मन्दिर गोरखी पहाड़ी पर था। यह गोरखी पहाड़ी गुरु गोरखनाथ की तपःस्थली थी। इसी कारण इसे गोरखी पहाड़ी कहा जाता है। इस पहाड़ी में दो अन्धेरी एवं उजाली गुफाँए भी हैं। इसी पहाड़ी की तलहटी में शिव ताण्डव मन्दिर है। शिव ताण्डव मन्दिर के पास एक अनूठी अनन्य प्रतिमा 'पठवा के बाल महावीर' की है, जो दर्शनीय है। यहाँ पास ही में एक चट्टान में 'काल भैरव' की उत्कीर्ण प्रतिमा है। मदन सागर बाँध पर सिद्ध बाबा का मेला भरता है जो कजलिया मेला के बाद लगता है।

3.3.10 गोरख गिरी खंड

मदन सागर सरोवर को सौंदर्य प्रदत्त करने वाला पश्चिम दिशा में 270 एकड़ भूमि पर विस्तृत विन्ध्य पर्वत की श्रंखला का एक पर्वत है| जिसकी उच्चतम चोटी धरातल से लगभग 1000 फुट ऊंची है| यह गिरी अपने वक्ष स्थल पर दो तलैया, छोटे तालाब, दो सुरम घाटियां विभिन्न लड्डू-पेड़ों के आकार की भांति एक-दूसरे के ऊपर रखी विशाल शिलाए जैसी गगन चुम्मी चोटिया और उनके मध्य स्थित अंधियारी व उजियारी (अंधेरी-उजेली) कंदराएं संजोए हैं| वर्षा ऋतु में इसका प्राकृतिक सौंदर्य अनुपम है जब इस की गोद में कल -कल नाद करते झरने बगल में सफेद जल के दुधिया कुएं, वन्य औषधीय व आयुर्वेदिक जड़ी- बूटियों के झुरमुट व वल्लरियां उनके मध्य विचरण करते वन्य जीव और कंदराओं से उद्घोष करते हिंसक पशु इसकी सघनता व सुरम्यता का दर्शन कराते हैं|

इसकी प्रकाशमय कंदराओं में ही भगवान राम को अपने वनवास काल में कुछ समय के लिए विश्राम हेतु यहां आकर्षित किया था जिसे सीता रसोइया कहते हैं| इसी से आकृष्ट हो आल्हा-उदल के गुरुवर गुरु गोरखनाथ ने भी इसी पवित्र तपोस्थली का चयन पर्वत पर तपस्या हेतु किया था| उन्हीं के पावन नाम पर इसका नाम गोरखगिरी पड़ा जो कालांतर में अपभ्रंश होकर गोखार कहलाने लगा इन्हीं आदि गुरु गोरखनाथ की शिष्य परंपरा में नौवीं सिद्ध गुरु दीपक नाथ का 13वी शताब्दी में इसी पर्वत पर तपोलीन रहने का उल्लेख मिलता है | वर्षा ऋतु मैं यह गिरी समूह सैलानियों कि भ्रमण स्थली बन जाता है जहां विभिन्न जनसमूह पिकनिक मनाते उजियारी-अंधियारी चुलो में प्रवेश करते मर्दन टुंडा जैसी विचित्र चोटियों पर पर्वतारोहण का साहसी प्रयास करते और उन पर पत्थरों को फेंक कर नाकते हुए अपने पौरुष का प्रदर्शन कर आमोद-प्रमोद करते हुए दिखाई देते हैं| राज्य सरकार द्वारा इस पर प्रस्तावित चेक-डैम के निर्माण उपरांत से इसकी मनोहर छटा में चार चांद और लग गए| इसके अतिरिक्त जहां इसने मध्य युग में अपने प्रांगण में सैनिक छावनियों को आश्रय दिया है वही धार्मिक स्थलों को भी स्थापित कराया है|

3.3.11 पान शोध केंद्र

पिछले कई दशकों में देवी विपदाओं एवं इसकी नाग वेल की जलवायु के कारणों से होने वाले अनेक रोगों से अपार हानि हुई जिससे पान कृषकों का पलायन होने लगा इससे आकृष्ट होकर भारत सरकार ने महोबा में एक पान शोध केंद्र की स्थापना इसी दशक में की है| इस केंद्र की स्थापना से पान कृषकों को पान के रोगों की कीटनाशक दवाओं से अप्रत्याशित लाभ हुआ है जिससे अब यह खेती बढ़कर लगभग 500 एकड़ के क्षेत्र में होने लगी है और कृषकों का पलायन भी रुक गया है|यहां स्थानीय पान कृषकों के अतिरिक्त सुदूर प्रांतों के पान किसानों को वैज्ञानिक ढंग से खेती करने का प्रशिक्षण दिया जाता है| इसके उपरांत वे अपने जनपदों में जा कर वैसी ही आधुनिक प्रणाली अपनाकर पान कृषकों को लाभान्वित करा रहे हैं| इस केंद्र को स्थापित कराने का श्रेय यहां के स्थानीय समाजसेवी श्री श्रीकृष्ण चौरसिया को है जिन्होंने इस क्षेत्र में तपोनिष्ठ समर्पित पान वैज्ञानिक डॉक्टर बाला सुब्रमणियम की विशष्ट सेवाओं से कृषक वर्ग को डॉ. रामसेवक चौरसिया के माध्यम से प्रशिक्षित कराकर लाभान्वित कराया| पान की खेती के प्रसार से प्रांतीय व केंद्र सरकार की आय में आशातीत वृद्धि हुई है| इस के अनुरूप प्रांत सरकार ने भी पान को उन्नत व प्रगतिशील बनाने हेतु एक केंद्र और खोला है जो चरखारी मार्ग पर स्थित है|

3.3.12 लक्ष्मी नारायण मंदिर

यह भव्य मंदिर गल्ला मंडी बाईपास रोड महोबा में स्थित है| इस श्वेताकार गगनचुंबी मंदिर पर भूमि पूजन सन 1999 में तत्कालीन उप जिलाधिकारियों श्री जे. पी. चौरसिया PCS एवं श्री विनोद कुमार पुरवार समाज सेवी के द्वारा संपन्न हुआ| मंदिर को 91 फीट की ऊंचाई दिए हुए 15×15

वर्ग फुट के गर्भ गृह में भगवान विष्ण-लक्ष्मी व विघ्न विनाशक गणपति को द्वार के सम्मुख प्रतिष्ठापित कराते हुए वास्तुशिल्प के भव्य उदाहरण की प्रस्तुति दी गई है| जितना मंदिर आकर्षक है उसकी छत्रछाया में उतनी ही उसकी उदार समाज सेवा भी है| मंदिर की गल्ला मंडी के सदस्यों सर्व श्री विनोद कुमार पुरवार, कैलाश कुमार गुप्ता व भूपेंद्र साहू व उनके सहयोगियों द्वारा व्यक्तियों को समाज सेवा अंतर्गत मुफ्त प्रदत्त की जा रही है जो ना केवल प्रशंसनीय वरन अनुकरणीय भी है|

- ❖ असहाय एवं निर्बल वर्ग के व्यक्तियों को एक एंबुलेंस गाड़ी की आकस्मिक नि:शुल्क सेवा|
- ❖ वृद्धों को 10 किलोग्राम गेहूं प्रति माह|
- ❖ कन्याओं के विवाह है में 1 कुंटल गेहूं|
- ❖ निर्बल और असहाय व्यक्तियों को प्रति रविवार शाम 4:00 बजे से 6:00 बजे तक 10 किलोग्राम अनाज|
- ❖ मंदिर परिसर से विवाह रचाने बालों को विशेष सुविधाएं|
- ❖ देश/ समाज को आकस्मिक परिस्थितियों में उदारतापूर्वक दान|

3.3.13 रामकुंड

गोरखगिरी के पूर्व में स्थित यह एक यज्ञ कुंड है| जो 36 ×36 वर्ग फीट क्षेत्र में लगभग 40 फीट की गहराई में कटाव दार पाषणों से निर्मित है| यह कुंड राम के नाम से रामकुंड जाना जाता है| वनवास काल में भगवान राम का यहां आगमन हुआ|

बतलाते हैं इसके पानी में गंधक का अंश होने के कारण इसमें रविवार व बुधवार को लोग स्नान कर चर्म रोगों से छुटकारा पाते हैं| सघन बट छाया के समीप दक्षिणी भाग में तीन वेदिकाएं स्थित है जो इसके यज्ञ कुंड होने की पुष्टि करती है| इस का जीर्णोद्वार काल 10 वीं शताब्दी जाना जाता है| यह भी जनश्रुति है की प्रथम चंदेल नरेशचंद्र वर्मन की रानी चंद्रावती इसी कुंड के समीप क्षति हुई थी| इसकी पुष्टि वहां पर स्थित एक देवी की प्रतिष्ठापित मूर्ति से सिद्ध होती है| जिसके समीप एक सती चिन्ह भी था जो लगभग 30 वर्ष पहले वहां से उठ गया है| कुंड के पूर्वी तट पर विशाल वटवृक्ष में कुछ देवी मूर्तियों को अपने अंक में समेट रखा है| जनपद में जहां कहीं भी सती चिन्ह मिलते हैं वह स्थान स्त्रियों के सती स्थल हैं| महोबा नगर की चारों दिशाओं में दुर्ग रक्षिणी चामुंडा और मंगलकारी शिव के प्रतिष्ठापित स्थलों के समीप ही सती चिन्ह अवश्य मिलते हैं| चंदेल काल के उपरांत बुंदेल काल में यह यज्ञ कुंड निश्चित रूप से सुधारा गया प्रतीत होता है| इसके पूर्व में चार वृत्ताकार लिंगों की स्थापना गिर संप्रदाय के साधुओं की समाधि के ऊपर है| केवल एक ही प्राचीन मंदिर में रामेश्वर मंगलकारी शिव स्थापित हैं| कहते हैं हिम्मत बहादुर गुसाई के समय में 1900 ईसवी के मध्य काल में यह स्थान गिर संप्रदाय के साधुओं को दे दिया गया था| तब से उन्हीं के संरक्षण में चला आ रहा है| यह नगर की पश्चिमी दिशा के मंगलकारी ईश्वर अर्थात रामेश्वर हैं जिन्हें अब केवल राम कुंड के नाम से जाना जाता है|

3.3.14 बड़े हनुमान जी मन्दिर

यह विशाल पवनसुत हनुमान जी का मंदिर महोबा के राजकीय बस स्टैंड के सामने स्थित है| भक्त शिरोमणि महावीर हनुमान जी के मंदिर की स्थापना सन 1983 में राम भक्तों स्वर्गीय डॉ. रामनाथ जी जैद का द्वारा तमाम विधना के उपरांत यज्ञ समापन कल 16 जून सन 1997 को प्राण प्रतिष्ठा हुई मंदिर 6 फुट की जगती के ऊपर एक भव्य विशाल 127 फुट की ऊंचाई लिए हुए 55 फुट के महावीर के विग्रह दिशा में को हाथ में गदा लिए बताएं भुजा से संजीवनी बूटी पर्वत को उठाने वायु

वेग से दक्षिण दिशा में आकाश मार्ग श्री रामानुज लक्ष्मण की मूर्छा को दूर राम के विलाप का अंत करने हेतु दर्शाया गया है प्रभु प्रलाप सुन कान विकल भाई बाहर निकाल आए हनुमान जिम करुणा में वीर रस बिग ग्रह की परिक्रमा पथ पर शुद्ध के 45 विग्रह दर्शाए गए और संत शिरोमणि तुलसीदास द्वारा रचित हनुमान चालीसा को मंदिर प्राचीन पर अंकित किया गया|

परिक्रमा पथ के पूर्वी भाग में नौ देवियों के विग्रह को रूपायित किया गया प्रांगण में लघु फुहारे मध्य पंचमुखी हनुमान जी को प्रतिष्ठापित कर आकर्षक रूप दिया गया इस मंदिर को देश के सबसे बड़े ऊंचे हनुमान मंदिर होने का गौरव प्राप्त है यहां सतत सत्संग प्रवचन राम कथा तथा अन्य पौराणिक कथा का आयोजन होता रहता है जिस की व्यवस्था संस्थापक के पुत्र श्री रमेश जैद का बंधु करते रहते हैं|

अध्याय चतुर्थ
महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासत

4.1 महोबा के जैन मन्दिर

4.1.1 जैन धर्म व तीर्थंकरों का परिचय

जैन धर्म भारत के सबसे प्राचीन धर्मों में से एक है। 'जैन धर्म' का अर्थ है - 'जिन द्वारा प्रवर्तित धर्म'। जो 'जिन' के अनुयायी हों उन्हें 'जैन' कहते हैं। 'जिन' शब्द बना है 'जि' धातु से। 'जि' माने - जीतना। 'जिन' माने जीतने वाला। जिन्होंने अपने मन को जीत लिया, अपनी वाणी को जीत लिया और अपनी काया को जीत लिया और विशिष्ट ज्ञान को पाकर सर्वज्ञ या पूर्णज्ञान प्राप्त किया उन आप्त पुरुष को जिनेश्वर या 'जिन' कहा जाता है'। जैन धर्म अर्थात 'जिन' भगवान् का धर्म। अहिंसा जैन धर्म का मूल सिद्धान्त है। जैन दर्शन में सृष्टिकर्ता कण कण स्वतंत्र है इस सृष्टि का या किसी जीव का कोई कर्ता धर्ता नही है। सभी जीव अपने अपने कर्मों का फल भोगते है। जैन धर्म मे ईश्वर सृष्टिकर्ता इश्वर को स्थान नहीं दिया गया है।

जैन धर्म मे 24 तीर्थंकरों को माना जाता है। तीर्थंकर धर्म तीर्थ का प्रवर्तन करते है। इस काल के 24 तीर्थंकर है-

1. **ऋषभदेव-** इन्हें 'आदिनाथ' भी कहा जाता है| ऋषभदेव जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर हैं। तीर्थंकर का अर्थ होता है जो तीर्थ की रचना करें। जो संसार सागर (जन्म मरण के चक्र) से मोक्ष तक के तीर्थ की रचना करें, वह तीर्थंकर कहलाते हैं। भगवान ऋषभदेव वर्तमान अवसर्पिणी काल के प्रथम दिगम्बर जैन मुनि थे|
2. **अजितनाथ** - जैन धर्म के 24 तीर्थकरो में से वर्तमान अवसर्पिणी काल के द्वितीय तीर्थंकर है। अजितनाथ का जन्म **अयोध्या** के राजपरिवार में माघ के शुक्ल पक्ष की अष्टमी में हुआ था। इनके पिता का नाम जितशत्रु और माता का नाम विजया था। अजितनाथ का चिह्न हाथी था। साधना में व्यतीत किया (संयमकाल)। भगवान अजिताथ की कुल आयु 72 लाख पूर्व की थी। 12 वर्षों की कठोर तपस्या के बाद अजितनाथ को अयोध्या में कैवल्य की प्राप्ति हुई | अजीत नाथ की प्रारंभिक मूर्ति वाराणसी से मिली है जो संप्राप्ति राजकीय संग्रहालय लखनऊ में संग्रहित है| कायोत्सर्ग मुद्रा में अवस्थित अजितनाथ निर्वस्त्र है और मूर्तिपीठिका पर उनका लांछन है|
3. **सम्भवनाथ**- संभवनाथ तीसरे जैन तीर्थंकर या जिन के रूप में जाने जाते हैं इनके पिता श्रावस्ती के शासक जितारी तथा माता सेना देवी थी दीक्षा के बाद श्रावस्ती में उन्हें केवल्य ज्ञान प्राप्त हुआ |संभवनाथ का लांछन अश्व है और इनके यक्ष-यक्षी क्रमश: त्रिमुख एवं दुरितारी (प्रज्ञप्ति) है|
4. **अभिनंदननाथ**- अभिनंदन नाथ जिन के पिता अयोध्या के महाराज संवर थे जबकि इनकी माता का नाम सिद्धार्थ था| कठोर तपस्या के फलीभूत इन्हें अयोध्या में शाल वृक्ष के नीचे

कैवल्य प्राप्त हुआ| इनकी स्वतंत्र मूर्तियां केवल देवगढ़, खजुराहो तथा नवमुनी एवं बारभजी गुफाओं से मिली हैं|

5. **सुमतिनाथनाथ-** सुमतिनाथ जी वर्तमान अवसर्पिणी (अवसर्पिणी, जैन दर्शन के अनुसार सांसारिक समय चक्र का आधा अवरोही भाग है जो वर्तमान में गतिशील है। जैन ग्रंथों के अनुसार इसमें अच्छे गुण या वस्तुओं में कमी आती जाती है। इसके विपरीत उत्सर्पिणी में अच्छी वस्तुओं या गुणों में अधिकता होती जाती है) काल के पांचवें तीर्थंकर थे। इनके पिता अयोध्या के शासक मेघ या मेघ प्रघ तथा माता का नाम मंगला था |

6. **पद्मप्रभु-** पद्मप्रभ जी वर्तमान अवसर्पिणी काल के छठे तीर्थंकर है। कालचक्र के दो भाग है - उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी। एक कालचक्र के दोनों भागों में 24 -24 तीर्थंकरों का जन्म होता है। वर्तमान अवसर्पिणी काल की चौबीसी के ऋषभदेव प्रथम और भगवान महावीर अंतिम तीर्थंकर थे । पदम प्रभु कौशांबी के शासक घर या धरण तथा देवी सुशीला के पुत्र थे इन्हें कौशांबी के वन में ज्ञान प्राप्त हुआ था| इनका लांछन पद्म है और यक्ष तथा यक्षी क्रमश: कुसुम अच्युता(मनोवेग) है| पद्मप्रभु की मूर्तियां बुंदेलखंड क्षेत्र में भी पाई गई हैं| यह केवल खजुराहो, छतरपुर, देवगढ़, ग्वालियर से मिली है|

7. **सुपार्श्वनाथ** – सुपार्श्वनाथ के पिता वाराणसी के शासक प्रतिष्ठ तथा माता पृथ्वी देवी थी| वाराणसी के वन में वृक्ष के नीचे सुपार्श्व को कैवल्य की प्राप्ति हुई थी| अधिकांश उदाहरणों में तीर्थंकर के सिर पर पांच सर्पफणों का छत्र दिखलाया गया है| इनके यक्ष मातंग तथा यक्षी शान्ता (काली) हैं| सुपार्श्वनाथ की सर्वाधिक मूर्तियां ललितपुर से मिली हैं| जिनमें पांच सर्पफणों के दल से सुशोभित सुपार्श्वनाथ को सामान्यत: कायोत्सर्ग मुद्रा में दिखलाया गया है|

8. **चंदाप्रभु -** चंद्रप्रभ जी वर्तमान अवसर्पिणी काल के आठवें तीर्थंकर है|

9. **सुविधिनाथ-** जो पुष्पदन्त के नाम से भी जाने जाते हैं, वर्तमान अवसर्पिणी काल के 9वें तीर्थंकर है। इनका चिन्ह 'मगर' हैं।

10. शीतलनाथ – दशवे तीर्थंकर शीतलनाथ के पिता महाराज अशरथ और नंदादेवी उनकी माता थी| इनका लांछन श्रावस्ती और यक्ष-यक्षी क्रमश: वृहम और अशोका है| शीतलनाथ की 10वीं सदी से पहले की कोई मूर्ति नहीं मिली है| 10 वीं शताब्दी में इनकी मूर्तियां बारभुजी, गुफा,त्रिपुरी (जबलपुर) और कुंभारिया पर प्राप्त हुई है| उनके हाथों में वरद-मुद्रा, दंड चक्र और शंख है|

11.श्रेयांसनाथ- जैन धर्म में वर्तमान अवसर्पिणी काल के 11वें तीर्थंकर थे। श्रेयांसनाथ जी के पिता का नाम विष्णु और माता का वेणुदेवी था। उनका जन्मस्थान सिंहपुर (सारनाथ) और निर्वाणस्थान संमेदशिखर माना जाता है। इनका चिन्ह गैंडा है। श्रेयांसनाथ के काल में जैन धर्म के अनुसार अचल नाम के प्रथम बलदेव, त्रिपृष्ठ नाम के प्रथम वासुदेव और अश्वग्रीव नाम के प्रथम प्रतिवासुदेव का जन्म हुआ।

12.वासुपूज्य जी- यह बारहवें तीर्थंकर है। विशेषता: दिगंबर मान्यतानुसार इनके पांचों कल्याणक चंपापुर में हुये। इनके पिता वासुपूज्य तथा माता जया है

13.विमलनाथ जी – यह वर्तमान अवसर्पिणी काल के तेरहवें तीर्थंकर है|

14.अनंतनाथ जी इनके पिता का नाम सिंहसेन तथा माता का नाम सुयशी था| श्वेतांबर परंपरा में तीर्थंकर का लांछन श्येन पक्षी और दिगंबर परंपरा रीछ बताया गया है|

15.धर्मनाथ जी - यह इक्ष्वाकु वंश के थे| इनके पिता का नाम राजा भानु तथा माता का नाम सुव्रता रानी था| इनका जन्म कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को श्रावस्ती में हुआ था|

16.शांतिनाथ- यह जैन धर्म में माने गए 24 तीर्थंकरों में से अवसर्पिणी काल के सोलहवे तीर्थंकर थे। माना जाता हैं कि शांतिनाथ के संग 900 साधू मोक्ष गए थे| शांतिनाथ का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी के दिन हुआ था। तब भरणी नक्षत्र था। उनके पिता का नाम विश्वसेन था, जो हस्तिनापुर के राजा थे और माता का नाम महारानी ऐरा था। जैनग्रंथो में शांतिनाथ को कामदेव जैसा स्वरुपवान बताया गया है। पिता के बाद शांतिनाथ हस्तिनापुर के राजा बने।

बारह माह की छदमस्थ अवस्था की साधना से शांतिनाथ ने पौष शुक्ल नवमी को 'कैवल्य' प्राप्त किया। ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी के दिन सम्मेद शिखर पर भगवान शान्तिनाथ ने पार्थिव शरीर का त्याग किया था।

17.कुंथुनाथ- कुन्थुनाथ जी जैनधर्म के सत्रहवें तीर्थंकर हैं। इनका जन्म हस्तिनापुर में हुआ था। पिता का नाम शूरसेन (सूर्य) और माता का नाम श्रीकांता (श्री देवी) था। बिहार में पारसनाथ पर्वत के सम्मेद शिखर पर इन्होंने मोक्ष प्राप्त किया।

18.अरनाथ जी- 18वे जिन के रुप में अरनाथ का नाम लिया जाता है इनके पिता का नाम सुदर्शन था जबकि महादेवी इनकी माता थी |चक्रवर्ती शासक के रूप में काफी समय तक राज्य करने के पश्चात अरनाथ को दीक्षा कैवल्य की प्राप्ति हुयी | श्वेतांबर परंपरा में इनका लांछन नन्घावर्ता और दिगंबर परंपरा में इनका लांछन मत्स्य बताया गया है| लगभग 10 वीं सदी में इनकी एक मूर्ति का निर्माण हुआ| इनके साथ पारंपरिक यक्ष-यक्षी का अंकन नहीं मिलता है | 10 वीं शताब्दी में इनकी एक मूर्ति सहेत-महेत (गोंडा) से मिली है जो संपत्ति राज्य संग्रहालय लखनऊ में संग्रहित है| शांतिनाथ के समान अधिकांश उदाहरणों में इन्हें कायोत्सर्ग मुद्रा में ही दिखाया गया है|

19.मल्लिनाथ जी - मल्लिनाथ जी उन्नीसवें तीर्थंकर है। जिन धर्म भारत का प्राचीन सम्प्रदाय हैं जैन धर्म के उन्नीसवें तीर्थंकर भगवान श्री मल्लिनाथ जी का जन्म मिथिलापुरी के इक्ष्वाकुवंश में मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष एकादशी को अश्विन नक्षत्र में हुआ था। इनके माता का नाम माता रक्षिता देवी और पिता का नाम राजा कुम्भराज था। इनके शरीर का वर्ण नीला था जबकि इनका चिन्ह कलश था। इनके यक्ष का नाम कुबेर और यक्षिणी का नाम धरणप्रिया देवी था। जैन धर्मावलम्बियों के अनुसार भगवान श्री मल्लिनाथ जी स्वामी के गणधरों की कुल संख्या 28 थी, जिनमें अभीक्षक स्वामी इनके प्रथम गणधर थे।

20.मुनिसुव्रत जी- मुनिसुव्रतनाथ या मुनिसुव्रत जैन धर्म के 20 वें तीर्थंकर माने गए हैं। उनके पिता का नाम सुमित्र और माता का नाम पद्मावती था। ये भगवान राम के समकालीन माने गये हैं। उनका जन्म राजगृह (राजगिर) और निर्वाण संमेदशिखर पर हुआ था। कछुवा उनका चिह्न बताया गया है। उनके समय में 9वें चक्रवर्ती महापद्म का जन्म हुआ जो विष्णुकुमार महापद्म के छोटे भाई थे। आगे चलकर विष्णुकुमार मुनि जैनधर्म के महा उद्धारक हुए।

21.नमिनाथ जी- नमिनाथ जी जैन धर्म के इक्कीसवें तीर्थंकर हैं। उनका जन्म मिथिला के इक्ष्वाकु वंश में श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को अश्विनी नक्षत्र में हुआ था। इनकी माता का नाम विप्रा रानी देवी और पिता का राजा विजय था।

22.अरिष्टनेमि जी – भगवान श्री अरिष्टनेमी अवसर्पिणी काल के बाईसवें तीर्थंकर हुए। इनसें पूर्व के इक्कीस तीर्थंकरों को प्रागैतिहासिककालीन महापुरुष माना जाता है। आधुनिक युग के अनेक इतिहास विज्ञों ने प्रभु अरिष्टनेमि को एक एतिहासिक महापुरुष के रूप में स्वीकार किया है। वासुदेव श्री कृष्ण एवं तीर्थंकर अरिष्टनेमि न केवल समकालीन युगपुरूष थे बल्कि पैत्रक परम्परा से भाई भी थे। भारत की प्रधान ब्राह्मण और श्रमण -संस्क्रतियों नें इन दोनों युगपुरूषों को अपना -अपना आराध्य देव माना है। ब्राह्मण संस्क्रति ने वासुदेव श्री क्रष्ण को सोलहों कलाओं से सम्पन्न विष्णु का अवतार स्वीकारा है तो श्रमण संस्क्रति ने भगवान अरिष्टनेमि को अध्यात्म के सर्वोच्च नेता तीर्थंकर तथा वासुदेव श्री क्रष्णा को महान कर्मयोगी एवं भविष्य का तीर्थंकर मानकर दोनों महापुरुषों की आराधना की है। भगवान अरिष्टनेमि का जन्म यदुकुल के ज्येष्ठ पुरूष दशार्ह -अग्रज समुद्रविजय की रानी शिवा देवी की रत्नकुक्षी से श्रावण शुक्ल पंचमी के दिन हुआ। समुद्रविजय शौर्यपुर के राजा थे। जरासंध से चलते विवाद के कारण समुद्रविजय यादव परिवार सहित सौराष्ट्र प्रदेश में समुद्र तट के निकट द्वारिका नामक नगरी बसाकर रहने लगे। श्रीक्रष्ण के नेत्रत्व में द्वारिका को राजधानी बनाकर यादवों ने महान उत्कर्ष किया।

23.पार्श्वनाथ- तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म आज से लगभग 3 हजार वर्ष पूर्व वाराणसी में हुआ था। वाराणासी में अश्वसेन नाम के इक्ष्वाकुवंशीय राजा थे। उनकी रानी वामा ने पौष कृष्ण एकादशी के दिन महातेजस्वी पुत्र को जन्म दिया, जिसके शरीर पर सर्पचिह्न था। वामा देवी ने गर्भकाल में एक बार स्वप्न में एक सर्प देखा था, इसलिए पुत्र का नाम 'पार्श्व' रखा गया। उनका प्रारंभिक जीवन राजकुमार के रूप में व्यतीत हुआ। एक दिन पार्श्व ने अपने महल से देखा कि पुरवासी पूजा की सामग्री लिये एक ओर जा रहे हैं। वहाँ जाकर उन्होंने देखा कि एक तपस्वी जहाँ पंचाग्नि जला रहा है, और अग्नि में एक सर्प का जोड़ा मर रहा है, तब पार्श्व ने कहा— 'दयाहीन' धर्म किसी काम का नहीं'।

24.वर्धमान महावीर - भगवान महावीर जैन धर्म के चौंबीसवें (24वें) तीर्थंकर है। भगवान महावीर का जन्म करीब ढाई हजार साल पहले (ईसा से 599 वर्ष पूर्व) वैशाली के गणतंत्र राज्य क्षत्रिय कुण्डलपुर में हुआ था। तीस वर्ष की आयु में महावीर ने संसार से विरक्त होकर राज वैभव त्याग दिया और संन्यास धारण कर आत्मकल्याण के पथ पर निकल गये। 12 वर्षो की कठिन तपस्या के बाद उन्हें कैवल्य ज्ञान प्राप्त हुआ जिसके पश्चात् उन्होंने समवशरण में ज्ञान प्रसारित किया। 72 वर्ष की आयु में उन्हें पावापुरी से मोक्ष की प्राप्ति हुई। इस दौरान महावीर स्वामी के कई अनुयायी बने जिसमें उस समय के प्रमुख राजा बिम्बिसार, कुनिक और चेटक भी शामिल थे। जैन समाज द्वारा महावीर स्वामी के जन्मदिवस को महावीर-जयंती तथा उनके मोक्ष दिवस को दीपावली के रूप में धूम धाम से मनाया जाता है। भगवान महावीर की प्रतिमा (महावीरजी, करौली, राजस्थान) जैन ग्रन्थों के अनुसार समय समय पर धर्म तीर्थ के प्रवर्तन के लिए तीर्थंकरों का जन्म होता है, जो सभी जीवों को आत्मिक सुख प्राप्ति का उपाय बताते है। तीर्थंकरों की संख्या चौबीस ही कही गयी है। भगवान महावीर वर्तमान अवसर्पिणी काल की चौबीसी के अंतिम तीर्थंकर थे और ऋषभदेव पहले। हिंसा, पशुबलि, जात-पात का भेद-भाव जिस युग में बढ़ गया, उसी युग में भगवान महावीर का जन्म हुआ। उन्होंने दुनिया

को सत्य, अहिंसा का पाठ पढ़ाया। तीर्थंकर महावीर स्वामी ने अहिंसा को सबसे उच्चतम नैतिक गुण बताया। उन्होंने दुनिया को जैन धर्म के पंचशील सिद्धांत बताए, जो है– अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अचौर्य (अस्तेय) और ब्रह्मचर्य। उन्होंने अनेकांतवाद, स्यादवाद और अपरिग्रह जैसे अद्भुत सिद्धांत दिए। महावीर के सर्वोदयी तीर्थों में क्षेत्र, काल, समय या जाति की सीमाएँ नहीं थीं। भगवान महावीर का आत्म धर्म जगत की प्रत्येक आत्मा के लिए समान था। दुनिया की सभी आत्मा एक-सी हैं इसलिए हम दूसरों के प्रति वही विचार एवं व्यवहार रखें जो हमें स्वयं को पसंद हो। यही महावीर का 'जीयो और जीने दो' का सिद्धांत है।

4.1.2. जैन मन्दिर की पृष्ठभूमि

प्रत्येक धर्म और संप्रदाय में तीर्थों का प्रचलन है| हर संप्रदाय के अपने तीर्थ हैं जो उनके किसी महापुरुष एवं उनकी किसी महत्वपूर्ण घटना के स्मारक होते हैं| प्रत्येक धर्म के अनुयायी अपने तीर्थों की यात्रा करते हैं तीर्थ स्थान पवित्र, शांति और कल्याण के धाम माने जाते हैं| जैन धर्म में भी तीर्थ क्षेत्र का विशेष महत्व रहा है| जैन अनुकृतियों के अनुसार तीर्थ क्षेत्र में ही पूजा स्थल और मंदिर होते हैं| जैन धर्म के अनुयायी प्रतिवर्ष बड़े- श्रद्धा भाव से अपने तीर्थों की यात्रा करते हैं| उनका विश्वास है कि तीर्थयात्रा से पुण्य होता है और परंपरा से यह मुक्ति लाभ का कारण होती है|

बुंदेलखंड के विभिन्न स्थलों से प्राप्त अभिलेखों से ज्ञात होता है कि यहां अनेक मंदिरों और मूर्तियों का निर्माण अभिकाओं और साधुओं की प्रेरणा या उपदेश द्वारा हुआ| इन साधुओं में लोकनंदी के शिष्य गुणनंद, कमलसेनाचार्य और अनेक शिष्य श्रीदेवी, देवेंद्र कीर्ति, आदि न यहां मंदिर निर्माण की प्रेरणा दी| बुंदेलखंड के जैन मंदिरों के विकास में देव पथ और खेवपथ का योगदान विशेष रूप से सराहनीय है |

4.1.3. जैन मन्दिर की अवस्थिति

देवी चंडीका के ठीक पश्चिम में लगभग 200 मीटर पीछे पहाड़ी पर स्थित संरक्षित स्मारक है| रेलवे स्टेशन से इसकी दूरी 5.9 किलोमीटर है| स्मारक के आस-पास अशोक, सागौन एवं अन्य वनस्पतीय

लगी हुयी है| यहाँ पर बड़ी- बड़ी चट्टाने रखी है जिन पर जैन तीर्थंकरों की मूर्तिया उत्कीर्ण की गयी हैं | और स्मारक के उपर से मदन सागर दिखाई देता है|

4.1.4 जैन मन्दिर का विवरण

देवी चंडीका के ठीक पश्चिम में लगभग 200 मीटर पीछे पहाड़ी पर स्थित संरक्षित स्मारक इसका है| निर्माण काल लगभग 1149 ईस्वी है| यह छोटी पहाड़ी जो कंदराओं युक्त है | मदन सागर के दाएं और एक द्वीप के रूप में स्थित है| जैन, बौद्ध और शैव धर्माचार्यों ने तपस्या हेतु शांत और नीरव वातावरण में तपोलीन रहने हेतु कंदराओं का चयन किया होगा| एक कन्दिरा में 24 जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाओं को शिलाओं पर उत्तीर्ण किया गया है| इस पहाड़ी के प्रवेश द्वार पर 2 स्तंभ सर्वोतोभद्र के रूप में खड़े हैं| जो अभी हाल ही में किसी ने खंडित कर दिए हैं| इस स्थान को जैन मतावलंबियों का अतिशय क्षेत्र कहा जाता है| इनको देखने से प्रतीत होता है कि चंदेली राजस्व काल में जैन धर्म को पर्याप्त प्रश्रय मेला था| चंदेल नरेश मदन बर्मन के राज्य काल में ही जैन धर्म का विशेष रूप से प्रसार हुआ| कहते हैं कि मदन वर्मा स्वयं भी जैन मुनियों से प्रभावित रहते थे | उनके राज्यकाल में बहुत से जैन मंत्रिपरिषद में थे

48

4.2 सूर्य मंदिर रहिलिया

4.2.1 सूर्य मन्दिर की पृष्ठभूमि

चंदेलों के पांचवी प्रतिभाशाली नरेश राहिल देव बर्मन ने 890 ईस्वी में राहिल सागर के निर्माण उपरांत इसके बांध पर ग्रेनाइट शिलओं से पंचायतन शैली के देवालय की स्थापना कराई जिसके गर्भ ग्रह में सूर्य की प्रतिमा को प्रतिष्ठित कराया गया था | इसके चारों ओर कोनों पर शिव गणेश शक्ति एवं विष्णु की प्रतिमाएं भी प्रतिष्ठित कराई गई थी| यह सभी देवी प्रतिमाएं मूर्ति कला की दृष्टि से अनुपम कलाकृति थी| मूर्तिकला में इस सूर्य मंदिर की महानतम कृति ने महोबा का नाम सुदूर तक प्रख्यात किया था|

4.2.2 सूर्य मन्दिर की अवस्थिति सूर्य मंदिर रहिलिया सूरजकुंड महोबा-छतरपुर बाईपास रोड से 3 किलोमीटर दूरी पर दाएं ओर स्थित संरक्षित स्मारक है|

4.2.3 सूर्य मन्दिर का विवरण

इसके चारों ओर कोनों पर शिव गणेश शक्ति एवं विष्णु की प्रतिमाएं भी प्रतिष्ठित कराई गई थी| यह सभी देवी प्रतिमाएं मूर्ति कला की दृष्टि से अनुपम कलाकृति थी| मूर्तिकला में इस सूर्य मंदिर की महानतम कृति ने महोबा का नाम सुदूर तक प्रख्यात किया था| खंडित गणेश,चक्र, प्रवेश द्वार पर और शार्दुल आदि इतनी बड़ी संख्या में बिखरे पड़े हैं जो इसकी कलात्मक भव्य रचना का भान कराते हैं| कुतुबुद्दीन ऐबक के आक्रमण काल में इसे ध्वस्त कर दिया गया था उस के भय से स्थानीय लोगों ने सुरक्षा की दृष्टि से इसकी कुछ मूर्तियों को भूमिगत कराकर शिलाओं से पाट दिया था| सन 1972 में धन लोभियों ने उत्खनन के समय विष्णु और सूर्य की परम सुंदर एवं भाव मय मूर्तियां पाई थी जिन्हें स्थानीय स्कूल के समीप अवस्थित कर दिया गया था विष्णु की मूर्ति फोटो चोर ले गए पर सूर्य की प्रतिमा का केवल सर भर ले पाए और शेष भाग वही छूट गया जो अब स्थानीय सर्वे कोठी में सुरक्षित है| यह देवालय खजुराहो की पंचायतन शैली पर निर्मित था इसकी समापन समारोह में एक महान सूर्य यज्ञ महोत्सव का आयोजन किया गया था| जिसके यज्ञ कुंड को चकोर शिलाओं से पाटकर निर्मित किया गया था जो आकार में 50×50 वर्ग फुट व गहराई में लगभग 50 फुट गहरा है इसे सूरजकुंड कहते हैं| सभी देवालयों कि निर्माण पूर्ति और मूर्ति प्रतिष्ठापना में यज्ञ महोत्सव के समापन पर श्रेष्ठ वास्तु की शिल्पियों को जो उसकी रचना में रत रहते थे सार्वजनिक रूप से व राज्य की ओर से सम्मानित किया जाता था| कार्तिक मास की पूर्णिमा को तभी से यहां अनवरत मेला लगता चला आ रहा है|

4.3 आल्हा की गिल्ली

4.3.1 आल्हा की गिल्ली की पृष्ठभूमि

आल्हा- ऊदल बड़े लड़ैया जिनकी मार सही न जाए, आल्हा के माध्यम से वीरों की गाथाएं लोगों की जुबान पर भले ही हो, लेकिन उनकी यादों को जिन्दा रखने वाली उनकी विरासतों पर उनके अपनों से ही अब खतरा बढ़ने लगा है। जहां भी वीर सपूतों के शौर्य को प्रदर्शित करते स्थल और निशान हैं उन्हें अब मिटाया जा रहा है। वीर आल्हा की स्मृति के रूप में स्थापित पाषाणीय स्तंभ आल्हा की गिल्ली आज भी अपने अंदर कई रहस्यों को समेटे जिज्ञासा का केंद्र बनी हुई है। चंदेलों के राजस्व काल में विभिन्न देवी देवताओं, नागों, यक्षों, वैतालों, तांत्रिकों, वामपंथियों, अघोरी और कापालिकों आदि की पूजा का विवरण मिलता है| जिनकी मढ़िया महोबा के चारों ओर यत्र-तत्र स्थापित है| 11वीं शताब्दी में आल्हा की गिल्ली का निर्माण कराया गया था। इस स्तंभ को बनवाने के

पीछे चंदेल राजाओं का क्या मकसद रहा होगा। कोई नहीं जानता। बताया जाता है कि जिस समय इसको स्थापित किया गया था, उस समय वहां पर घना जंगल था। वर्तमान में लोग इसके आसपास मकान बनाकर अतिक्रमण करते जा रहे हैं और पुरातत्व विभाग खामोश है।

4.3.2 आल्हा की गिल्ली की अवस्थिति

यह मदन सागर के पूर्वी तट पर प्राकृतिक पाषाण शिला के ऊपर स्थित-संरक्षित स्मारक है| यह रेलवे स्टेशन से लगभग 2 किलोमीटर दूर है| इसके चरो और पेड़-पौधे लगे हुए हैं | आल्हा की गिल्ली के सामने एक मस्जिद बनी हुयी है | गिल्ली के चारो ओर से दीवार बनी हुयी है तथा इसके आस-पास कई चट्टानें भी हैं|

4.3.3 आल्हा की गिल्ली का विवरण-

यह एक 9.4 फुट ऊंचा लगभग 13 इंच व्यास का मोटा वृताकार और नोकदार स्तंभ है| जो एक विशाल शिला के मध्य भाग में स्थित है यह कुछ हिलता भी है इसे लोग आल्हा की गिल्ली कहते हैं| और इसके पूर्व में वर्णित दीवट को आल्हा का डंडा| लेकिन इसका ठोस प्रमाण नहीं मिल रहा है कि यह वास्तव में क्या है? कजली मेले में दूरदराज से आने वाली भीड़ आल्हा की गिल्ली को देखने यहां आज भी आती है। सावन के महीने में कजली मेला होता है। गिल्ली मदन सागर के किनारे स्थापित होने के कारण सावन के महीने में पानी के बीचों- बीच घिर जाती है | यह स्तंभ हल्का सा नोकदार है जो यक्षों की स्थापना का संकेत है| इसी के समीप कुछ मढ़ भी बने हैं जो यक्षों की पुष्टि करते हैं| हो सकता है उस काल में य इससे पूर्व भी यह क्षेत्र चंदेल नरेश यक्षों का केंद्र रहा हो जिसे चंदेल नरेश श्रद्धा की दृष्टि से देखते रहे होंगे||

पत्थर को बड़ी कलाकारी के साथ तराश कर बनाई गई गिल्ली आज भी आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। इसकी यह खासियत है कि इसे पत्थर से बजाने में खन-खन की आवाज आती है। लोग इसकी आवाज सुनने के लिये यहां आते हैं। पत्थर मारने पर इसमें से मधुर ध्वनि निकलती है। सैकड़ों वर्ष बीत जाने के बाद भी यह आज तक ज्यो की त्यों प्राचीन स्वरूप में है।

लेकिन इसके आसपास सफाई न होने से लोगों का रुझान इस ओर कम होता जा रहा है। इसके रख-रखाव के अभाव में गिल्ली इस समय अतिक्रमण का शिकार हैं। इसके आस-पास बस्ती होने की वजह से इसके अस्तित्व को खतरा है। मकानों की आड़ में यह स्थान छिप गया है। साथ ही लोगों द्वारा मलमूत्र फेंकने और कूड़ा करकट फेंके जाने के कारण लोग अब यहां कम आ रहे हैं। आल्हा की गिल्ली अपने आप में कई रहस्यों को समेटे है।

कवदंती के अनुसार पहले आल्हा-ऊदल इतनी विशाल गिल्ली से खेल खेला करते थे। इस स्थान को पुरातत्व ने अपने कब्जे में तो ले लिया है लेकिन स्थल एकदम खुला हुआ है। यहां लोग गंदगी फेंकते हैं। यही नहीं स्मारक के आस-पास बने मकानों की दीवार भी इससे सटी हुई बनी हैं। स्मारक को देखने के लिए जो लोग दूर-दूर से आते हैं पता ही नहीं चल पाता कि इसका महत्व क्या है। कारण कि यहां इसकी जानकारी के लिए कोई शिलालेख या बोर्ड नहीं लगा है।

4.4 खकरामठ

4.4.1 खकरामठ की पृष्ठभूमि

विन्ध्य पर्वत मालाओं सुरम्य सरोवरों की नैसर्गिक सुषमा से परिपूर्ण पुरातात्विक महत्व की बेजोड़ धरोहर खकरामठ का निर्माण नौवीं शताब्दी में सुप्रसिद्ध चंदेल राजा मदनवर्मन ने कराया था। मदन सागर के मध्य में खजुराहो के मंदिरों की तर्ज पर त्रिभुजाकार शैली में बनाया गया यह मंदिर आज भी आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। ग्रेनाइट पत्थर पर महीन कारीगरी के साथ निर्मित किए गए इस मंदिर की कलात्मकता देखते ही बनती है। खकरामठ का निर्माण बगैर चूना, सीमेंट से किया गया है। एक दूसरे से सटाकर रखी गई ग्रेनाइट की शिलाएं आश्चर्यचकित करती है, साथ ही वास्तुकला का एहसास कराती है। यह ऐतिहासिक धरोहर आज भी पर्यटकों को आकर्षित कर रही है। परंतु पुरातत्व विभाग द्वारा मंदिर तक मार्ग न बनाने से सैलानी दूर से ही मंदिर को देख लौट जाते हैं।

4.4.2 खकरामठ की अवस्थिति

यह मदन सागर के मध्य एक द्वीप पर स्थित संरक्षित स्मारक है| यह ऐतिहासिक धरोहर आज भी पर्यटकों को आकर्षित कर रही है। यह रेलवे स्टेशन से 4 किलोमीटर दूर| इस स्मारक के 200 मीटर दूर छोटी चण्डिका मन्दिर है| इस चारो ओर पानी भरा रहता है| मठ तक पहुचने के लिए नाव का सहारा लेना पड़ता है| मदनसागर के बीचो-बीच होने के कारण इसकी प्राकृतिक सौन्दर्यता दर्शनीय है|

4.4.3 खकरामठ का विवरण

मदन सागर सरोवर को सबसे अधिक सौन्दर्य प्रदत्त करने वाला स्मारक खकरामठ ही है जो आक्रमणकारियों की दृष्टि से जलमध्य स्थित होने के कारण बच सका| यह मदन वर्मन की वास्तुकी सौंदर्यप्रियता का धोतक है| इसका निर्माण प्राकृतिक पाषाण शिलाओं को संग्रहित कर ऊंची जगती पर किया गया है| जिसका आधार 42 फुट और ऊंचाई 103 फुट है| इसकी रचना खजुराहो शैली पर है| सबसे ऊंचे गर्भगृह, अंतराल, महामंडप, अर्द्धमण्डप आदि चढ़ाव उतारदार है| मुख्य द्वार पूर्व में तथा शेष दो द्वार उत्तर और दक्षिण में है| सभी इतिहासवेत्ताओं ने इसे शिवालय कहा है| जनरल कनिंघम ने सन 1843 के आगमन में इसकी गर्भगृह में शिवलिंग के भग्नावशेष देखे थे| भीतर व बाहर कटावदार शीलाओ में कोई अलंकरण नहीं है| सभी कटावदार पाषाण खंडक्रम से रोपित हैं| आकार में यह खजुराहो के सभी मंदिरों से बड़ा है| इसका गर्भगृह 12 ×12 वर्ग फुट है| 15 फुट की ऊंचाई पर इसका अलंकृत कोनदार मंडप है| इसके गर्भगृह व महामंडप के बाहर चारों ओर 12 फीट की ऊंचाई पर 5 टक्के बने हैं जिनमें आगे की और गणेश व भारकण्डेय, मध्य में दाएं और बाएं और विष्णु और लक्ष्मी तथा पश्चिम में सूर्य प्रतिमा के प्रतीत होते हैं| गर्भगृह में उत्तर, दक्षिण और पश्चिम की ओर इन्हीं बड़े तक्कों की ओर 15 फीट की ऊंचाई पर तीन छोटे तक्के हैं| उनमें विष्णु के ऊपर शेषनाग, लक्ष्मी के ऊपर गंगा पश्चिमी छोटे तक्के में सूर्य के ऊपर चंद्रमा की प्रतिमाएं स्थापित होंगी| इन सभी तक्को में (आलो) प्रतिष्ठापित मूर्ति रही होंगी | कला की दृष्टि से देव के चारों और सुसज्जित किए गए होंगे|

पूर्व में महामंडप के ऊपर शार्दूल स्थापित था| यह शार्दूल सिंह की एक प्रजाति है जो अब लुप्त है| चंदेलों का यह उस समय राष्ट्रीय पशु था| अन्य देवालयों में भी यह इसी भांति प्रतिष्ठित किया गया है|

उपर्युक्त वर्णित 8 मूर्तियां में से कुछ का संकेत मिलता है |वर्ष 1936 में कोई भी विशिष्ट है मूर्तियां महोबा से बाहर ले जायी गयी थी| उन्हें कुछ खकरामठ और कुछ जैन मूर्तियां महोबा के जैन मंदिरों की थी| संपूर्ण रूप से व्यवस्थित रहने पर यह देवालय कितना सौन्दर्यशील रहा होगा? जिज्ञासा उठती है कि इसका नाम खकरामठ क्यों पड़ा? दक्षिण भारत में काकरा आरती का प्रचलन शिव पूजा में होता है| जिससे यह समानता शिव के लिए होगी| पूर्व काल में 'स अक्षर का प्रयोग 'ष' अक्षर से होता था जिसका उच्चारण 'ख' के रूप में होता था| अत: यह पहले शंकरमठ कहा जाता है जो अपभ्रंश होकर खकरामठ हो गया | वास्तव में यह शंकरमठ है और इसमें भगवान शंकर की बड़ी लिंग मूर्ति स्थापित थी जिसे सरोवर में फेंक दिया गया था| इसका उल्लेख इतिहासकारों ने भी किया था आज से एक शताब्दी पूर्व यह संरक्षक था| इसके शिखर तक साहसी युवक चढ़कर पहुंचते थे लेकिन सन 1934 ईस्वी के भूचाल में इसकी शिखर की कुछ शिलाये व आमलक गिर पड़े हैं| जिससे अब पहुच दुर्लभ हो गई है| इसकी सुंदरता में चार चांद तब लगते थे| जब इसके चारों और गहरे नीले पानी के मध्य हरित के बीच पुरइनों के बीच विकसित कमल कली कलीकाये वायु वेग से झूम-झूमकर सुगंध प्रसारण करते हैं| सैलानियों की यह अब भ्रमण स्थली है|

अध्याय पंचम
अनुसंधान विधि

5.1 शोध विधि

किसी भी अनुसंधान की मुख्यता तीन श्रेणियां होती हैं|

- ❖ ऐतिहासिक विधि
- ❖ वर्णनात्मक विधि
- ❖ प्रयोगात्मक विधि

प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण अनुसंधान पर आधारित है| वर्णनात्मक अनुसंधान का एक सर्वाधिक प्रचलित प्रकार सर्वेक्षण अनुसंधान है| सर्वेक्षण किसी क्षेत्र, समूह या संस्था की वर्तमान स्थिति को जानने, विश्लेषित करने, व्याख्यित करने तथा प्रतिवेदित करने की एक सुनियोजित प्रयास है| जिसमें प्राय: प्रश्नावली, साक्षात्कार या परीक्षणों के माध्यम से काफी अधिक व्यक्तियों से प्रदत्त संकलित किए जाते हैं| इसमें व्यक्तिगत इकाइयों की विशेषताओं को वैयक्तिक रूप से न देखकर समूह की विशेषताएं सामूहिक रूप में देखी जाती हैं एवं प्रद्त्तों को समूह एवं उपसमूहों की विशेषताओं के रूप में संक्षिप्तीकरण कर प्रस्तुत किया जाता है| इस दृष्टि से सर्वेक्षण अनुसंधानों को अनुप्रस्थ प्रकार का अनुसंधान कार्य भी कहा जा सकता है| वर्तमान समय में सर्वेक्षण को अध्ययन एक महत्वपूर्ण प्रकार माना जाता है| इसे सूचनाओं को प्राप्त करने व सारणीबद्ध करने की लिपकीय कार्य नहीं समझना चाहिए | वरन यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित समस्या तथा उद्देश्यों पर आधारित होता है एवं इनमें विशेषज्ञता पूर्ण तथा कल्पनाशील नियोजन, प्रतिनिधित्व प्रतिदर्श में प्रद्त्तों का व्यवस्थित संकलन, प्राप्त प्रदत्तों का सजग विश्लेषण व व्याख्या, एवं परिणामों का तार्किक कौशलयुक्त प्रतिवेदन तैयार करने जैसी विभिन्न बौद्धिक क्रियाएं सम्मिलित रहती हैं|

सर्वेक्षण शब्द अंग्रेजी शब्द Survey का हिंदी पर्याय है| अंग्रेजी शब्द Survey से तात्पर्य 'To look over' या to oversee से हैं| अतः सर्वेक्षण से तात्पर्य किसी परिस्थितियां घटना की सही जानकारी प्राप्त करने के लिए उसके किसी क्षेत्र का समालोचनात्मक निरीक्षण करने से है| इसके अंतर्गत किसी घटना, समूह या परिस्थिति, विभिन्न पक्षों से संबंधित सूचनाएं, आंकिक रूप से संग्रहित की जाती हैं एवं सांख्यकीय प्रविधियों के द्वारा विश्लेषित की जाती हैं| सर्वेक्षण के लिए सामान्य सर्वेक्षण शब्द का प्रयोग भी होता है जो किसी समय विशेष पर प्रचलित दशाओं की जानकारी प्राप्त करता है|

सर्वेक्षण के प्रकारों को प्रतिदर्श सर्वेक्षण तथा संगणना सर्वेक्षण में भी बांटा जा सकता है| प्रतिदर्श सर्वेक्षण में लक्ष्य जनसंख्या से छांटे गए एक छोटे से प्रदर्शित किए जाते हैं एवं उनका सामान्यीकरण के संपूर्ण लक्षणों के बारे में निष्कर्ष निकाले जाते हैं| इसके विपरीत सर्वेक्षण में संपूर्ण जनसंख्या से प्राप्त निष्कर्ष निकाले जाते हैं| अनुसंधान कार्यों हेतु प्रतिदर्श सर्वेक्षण का प्रयोग किया जाता है एवं विधि द्वारा प्रतिदर्श का चयन करने पर जोर दिया जाता है परिस्थितियों से जुड़े सर्वेक्षणों को शैक्षिक पर्यवेक्षण सामाजिक परिस्थितियों से जुड़े सर्वेक्षणों को सामाजिक सर्वेक्षण, राजनीतिक मुद्दों से संबंधितसर्वेक्षण को आर्थिक सर्वेक्षण कहा जाता है| जनता के लिए जनमत सर्वेक्षण करने का प्रचलन बढ़ता जा रहा है|

जॉन डब्लू वेस्ट (1959) "आंकड़ों का एकत्रीकरण संपूर्ण जनसंख्या में सर्वेक्षण द्वारा होना चाहिए"

शैक्षिक सर्वेक्षण में विद्यालय सर्वेक्षण का विशेष महत्व है जिस के संबंध में गुड बार एवं स्फेट्स(1941) ने अपने विचार व्यक्त किए है- यह इसी प्रकार कहा जा सकता है कि कोई भी एकीकृत कार्य इतनी पूर्णता के साथ अनुसंधान के आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का उसके विविध अवस्थाओं में प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता है जितना कि विद्यालय सर्वेक्षण करता है|

पारसनाथ राय (1973) के अनुसार-

“वर्णनात्मक अनुसंधान (सर्वेक्षण उपागम) क्या है? का वर्णन एवं विश्लेषण करता है |परिस्थितियों एवं अभिवृत्ति या जो पाई जा रही हैं| प्रक्रिया जो चल रही है| अनुसंधान जो किए जा रहे हैं अथवा नई दिशाएं जो विकसित हो रही हैं उन्हीं से इसका संबंध है|

5.2 जनसंख्या

अनुसंधान में जनसंख्या (Population) अथवा समष्टि से तात्पर्य उन सभी इकाइयों के समुच्चय(Set of Units) से है जिनमें कुछ सामान्य विशेषताएं होती हैं तथा जिनके संबंध में अनुसंधानकर्ता कुछ निष्कर्ष ज्ञात करना चाहता है|

जनसंख्या सीमित(Finite) भी हो सकती है तथा असीमित(Infinite) भी हो सकती है| सीमित जनसंख्या वे समुच्चय होते हैं जिनमें इकाइयों की संख्या सुनिश्चित होती है| असीमित जनसंख्या व जनसंख्या है जिनमें इकाइयों की संख्या अनिश्चित अथवा अनंत होती है जैसे आकाश में तारों की संख्या| जनसंख्या को परिकल्पित जनसंख्या तथा यथार्थ जनसंख्या में भी विभक्त किया जा सकता है| जो जनसंख्या मूर्त रूप में विद्यमान होती है उसे यथार्थ जनसंख्या कहते हैं दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि यथार्थ जनसंख्या की समस्त इकाइया वास्तव में विद्यमान होती है| इसके विपरीत जो जनसंख्या मूर्त रुप से विद्यमान नहीं होती उन्हें परिकल्पित जनसंख्या कहते हैं स्पष्ट है कि परिकल्पित जनसंख्या को केवल कल्पना की जा सकती है परंतु वास्तव में विद्यमान नहीं होती हैं| प्रस्तुत लघु शोध में शोधकर्त्री द्वारा जनसंख्या के रूप में निम्नलिखित ऐतिहासिक विरासत स्थलों को लिया गया है –

❖ आल्हा-ऊदल

❖ आल्हा-ऊदल व उनका अखाड़ा

❖ शिव ताण्डव

- ❖बड़ी चण्डिका
- ❖छोटी चंडिका (महिषासुर मर्दनी)
- ❖मनिया देवी
- ❖विजय सागर
- ❖कीरत सागर
- ❖कजलियों का मेला
- ❖मदन सागर तालाब
- ❖गोरख गिरी खंड
- ❖पान शोध केंद्र
- ❖लक्ष्मी नारायण मंदिर
- ❖रामकुंड
- ❖बड़े हनुमान जी मन्दिर
- ❖महोबा के जैन मन्दिर
- ❖सूर्य मंदिर रहिलिया
- ❖आल्हा की गिल्ली
- ❖खाकरमठ

5.3.न्यादर्श

न्यादर्श को प्रतिदर्श भी कहते हैं| प्रतिदर्श(Sample)जनसंख्या का वह छोटा भाग है जिसे अनुसंधानकर्ता के द्वारा वास्तविक अध्ययन के लिए चयनित किया जाता है| न्यादर्श जनसंख्या का

प्रतिनिधित्व सूक्ष्म-रूप होता है| तथा इससे प्राप्त सूचनाओं का सामान्यीकरण करके जनसंख्या के बारे में अनुमान लगाया जाता है| स्पष्ट है कि न्यादर्श जनसंख्या की विशेषताओं का प्रतिबिंब होता है न्यादर्श के अंग्रेजी पर्याय Sample का उद्भव लैटिन Exemplum के शब्द से हुआ है जिसका अर्थ है Example अर्थात उदाहरण| इस शाब्दिक अर्थ से भी संकेत मिलता है की प्रतिदर्श जनसंख्या की कुछ ऐसी इकाइयों का संकलन होता है जिसे जनसंख्या की विशेषताओं को स्पष्ट करने के लिए उदाहरण स्वरूप चुना जाता है| अतः कहा जा सकता है कि प्रतिदर्श वास्तव में जनसंख्या का अध्ययन हेतु चयनित किया गया वह अंश है जिसका अनुसंधानकर्ता वास्तव में अध्ययन करता है तथा जिससे प्राप्त प्रतिदर्श की विशेषताओं का सामान्यीकरण करके जनसंख्या की विशेषताओं का अनुमान लगाया जाता है| जनसंख्या की इकाइयों को प्रतिचयन इकाइयां कहते हैं तथा किसी जनसंख्या की सभी प्रतिचयन इकाइयों के समूह को प्रतिचयन ढ़ांचा कहते हैं| प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा न्यादर्श के रूप में प्रमुख 4 स्थलों को लिया गया है जो इस प्रकार है-

- ❖ महोबा के जैन मन्दिर
- ❖ सूर्य मंदिर रहिलिया
- ❖ आल्हा की गिल्ली
- ❖ खाकरमठ

उपकरण

शिक्षा अनुसंधान के अंतर्गत विविध प्रकार की मापन प्रविधियों को प्रयुक्त किया जाता है| इन्हीं मापन प्रविधियों को उपकरण की संज्ञा दी जाती है| विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान आंकड़ों के संकलन में अधिकांश: प्रायोगिक प्रविधि का उपयोग किया जाता है परंतु समाजशास्त्रीय, शैक्षिक तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में ऐसा संभव नहीं है क्योंकि यह व्यक्ति को मानसिक स्तर पर भी प्रभावित करते हैं|

इसलिए शिक्षा अनुसंधान के क्षेत्र में अनेक प्रविधियों का उपयोग किया जाता है| प्रत्येक मापन प्रविधि एक विशेष प्रकार के प्रद्त्तों के संकलन का स्रोत होती है| इन प्रवृतियों द्वारा विशेष प्रकार की सूचनाओं को परिमाणात्मक तथ्यों के रूप में प्राप्त किया जाता है| इन प्रविधियों द्वारा गुणात्मक तथा परिमाणात्मक प्रदत्त प्राप्त किए जाते हैं| इन प्रविधियों के आधार पर संख्यात्मक वर्णन एवं विवेचन किया जाता है|

मुख्यता मापन प्रविधियों की रचना इसलिए की जाती है जिससे परिमाणात्मक प्रदत्त प्राप्त किए जा सकें| मापन प्रविधियों द्वारा प्रदत्त हों का संकलन शोध प्रक्रिया का महत्वपूर्ण सोपान है| इन प्रद्त्तों के आधार पर ही किसी शोध कार्य का निष्कर्ष निकाले जाते हैं| मापन प्रविधियां शोध के वैज्ञानिक आधार प्रदान करती हैं| मापन के द्वारा प्रदत्त तीन स्तरों पर प्राप्त किए जाते हैं| सांकेतिक,अनुस्थितियों के रूप में तथा प्राप्तांक के रूप में, शिक्षा अनुसंधान में शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक प्रद्त्तों को प्रयुक्त किया जाता है इसलिए विविध प्रकार की मापन प्रविधियों का प्रयोग होता है|

शोध अनुसंधान में निम्न मापन प्रविधियों का अधिक प्रयोग किया जाता है-

- ❖ प्रश्नावली
- ❖ सूचीपत्र
- ❖ अनुस्थिति मापनी
- ❖ परिक्षण

प्रस्तुत शोध हेतु प्रश्नावली निर्माण

प्रस्तुत शोध के प्रदत्तों का संकलन करने के लिए प्रश्नावली प्रविधि को सुनिश्चित किया गया है एवं प्रश्नावली का निर्माण शोधकर्त्री द्वारा स्वयं किया गया है| महोबा नगर के दुर्लक्ष ऐतिहासिक

विरासतों की जागरूकता का मापन करने के लिए शोध के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए प्रश्नों का निर्माण किया गया है

प्रत्येक आयाम के लिए प्रश्नों का निर्माण किया गया है| इसके पश्चात शोधकर्त्री ने शोध पर्यवेक्षक से प्रश्नों के संबंध में निर्देश प्राप्त किये| तत्पश्चात शिक्षा संकाय के शिक्षकों एवं विषय विशेषज्ञों से प्रश्नावली के संबंध में राय प्राप्त की गई अंत में शोध पर्यवेक्षक एवं विषय विशेषज्ञों के निर्देशानुसार प्रश्नावली को अंतिम रुप दिया गया| प्रश्नावली में उत्तरदाता को उत्तर के लिए चार विकल्प दिए गए हैं जिसमें उत्तरदाता को किसी एक विकल्प का चयन करना है|

वैद्यता

मापनी निर्माण में समय कमी के कारण मापनी का न्यादर्श पर पूर्व परीक्षण नहीं किया गया तथा विषय विशेषज्ञ की राय एवं निर्देशों को ही मापनी की वैद्यता मान लिया गया है|

गणना कार्य-

प्रश्नावली द्वारा उत्तर प्राप्त करने के पश्चात उनके उत्तरों की गणना निम्नअनुसार की जाएगी सही विकल्प के चयन करने पर 1 अंक तथा गलत विकल्प के चयन अंक पर 0 तथा तटस्थ या कोई उत्तर न देने पर 0 अंक प्रदान किया जाएगा |

अध्याय षष्ठ
प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण, विवेचन एवं विश्लेषण

प्रस्तुत अध्याय का उद्देश्य वर्णित शोध विधि द्वारा एकत्रित प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण तथा विवेचन करना है| प्रस्तुत अध्याय में सांख्यकीय विश्लेषण से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण किया गया है|

6.1 प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण

कुल जनसंख्या

(महोबा नगर के अन्तर्गत आने वाले स्नातक स्तर के कुल छात्र-छात्राएं)
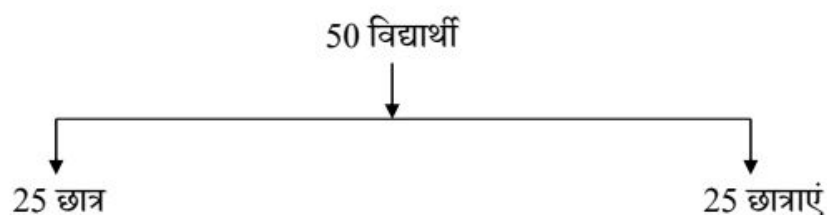
महोबा नगर के चयनित स्नातक स्तर के छात्रों की सूंची

तालिका-1

क्रमांक	स्नातक स्तर के छात्रों का नाम	प्राप्तांक
1	कल्लू कुशवाहा	22
2	राकेश कुमार गुप्ता	23
3	पिन्टू अहिरवार	19
4	शशि सिंह	19
5	मुकेश गुप्ता	17
6	सुरेन्द कुमार सोनी	18
7	प्रताप सिंह	21
8	मोनू बाजपेयी	21
9	निखिल सोनी	21
10	उपकार	19
11	दिनेश गुप्ता	23

12	रामस्वरूप	21
13	मयंक कुमार सोनी	21
14	आनन्द देव	22
15	उपकार द्विवेदी	21
16	लवलेश पाठक	21
17	संदीप कुमार	19
18	उपदेश यादव	22
19	पुनीत सिंह	19
20	पंकज विश्वकर्मा	23
21	अभिषेक कुमार	22
22	नरेन्द्र सिंह	21
23	सुरेश सोनी	24
24	कौशल शुक्ला	20
25	अशोक मिश्रा	21

महोबा नगर की चयनित स्नातक स्तर की छात्राओं की सूंची

तालिका-2

क्रमांक	**स्नातक स्तर की छात्राओं का नाम**	**प्राप्तांक**
1	मयंकिता सिंह	17
2	आकांक्षा गुप्ता	18
3	रमा सोनी	15
4	नेहा वर्मा	22
5	पूजा अग्रवाल	17
6	रुचि गौतम	16
7	मीनू सक्सेना	15
8	गीता देवी	20
9	मीनाक्षी द्ववेदी	17

10	अपर्णा शिवहरे	18
11	स्वेता सोनी	16
12	सृष्टि नामदेव	22
13	संगीता पुरवार	18
14	निर्मला खरे	19
15	अर्चना प्रजापति	18
16	प्रियंका गुप्ता	19
17	प्रीति सक्सेना	18
18	अर्चना पुरवार	19
19	प्रतिमा वर्मा	15
20	स्वेता तिवारी	18
21	आरती गुप्ता	17
22	कुसुम खरे	18
23	प्रभा चौरसिया	20
24	उमा पुरवार	16
25	साक्षी गौतम	17

महोबा नगर की चयनित स्नातक स्तर की छात्राओं का मध्यमान

तालिका-3

क्रम संख्या	प्राप्तांक (X)	d =X-M	d^2
1	17	-0.8	0.64
2	18	+0.2	0.04
3	15	-2.8	7.84
4	22	+4.2	17.64
5	20	+2.2	4.84
6	17	-0.8	0.64
7	16	-1.8	3.24
8	15	-2.8	7.84
9	17	-0.8	0.64
10	20	+2.2	4.84
11	17	-0.8	0.64
12	18	+0.2	0.04
13	16	-1.8	3.24
14	22	+4.2	17.64
15	18	+0.2	0.04
16	19	+1.2	1.44
17	18	+0.2	0.04
18	19	+1.2	1.44
19	15	-2.8	7.84
20	18	+0.2	0.04
21	17	-0.8	0.64
22	18	+0.2	0.04
23	20	+2.2	4.84
24	16	-1.8	3.24
25	17	-0.8	0.64
N= 25	$\sum$ **X = 445**		$\sum$ **D = 90**

महोबा नगर की चयनित स्नातक स्तर की छात्रों का मध्यमान

तालिका-4

क्रम संख्या	प्राप्तांक (X)	d =X-M	d^2
1	22	+1.2	1.44
2	23	+2.2	4.84
3	19	-1.8	3.24
4	19	-1.8	3.24
5	17	-3.8	14.44
6	18	-2.8	7.84
7	21	+0.2	0.04
8	21	+0.2	0.04
9	21	+0.2	0.04
10	19	-1.8	3.24
11	23	+2.2	4.84
12	21	+0.2	0.04
13	21	+0.2	0.04
14	22	+1.2	1.44
15	21	+0.2	0.04
16	21	+0.2	0.04
17	19	-1.8	3.24
18	22	+1.2	1.44
19	19	-1.8	3.24
20	23	+2.2	4.84
21	22	+1.2	1.44
22	21	0.2	0.04
23	24	+3.2	10.24
24	20	-0.8	0.64
25	21	+0.2	0.04
N =25	$\sum X = 520$		$\sum D= 70$

छात्रों का मध्यमान

$\sum X = 520$

$$M_1 = \frac{\sum X}{N}$$

$$= \frac{520}{25}$$

$$= 20.8$$

छात्राओं का मध्यमान

$\sum X = 445$

$$M_2 = \frac{\sum X}{N}$$

$$= \frac{445}{25}$$

$$= 17.8$$

$\sum d^2_1 = 70$

$$Sd_1 = \frac{\sum d^2_1}{25} = \frac{70}{25} = 2.8$$

$\sum d^2_2 = 90$

$$Sd_1 = \frac{\sum d^2_2}{25} = \frac{90}{25} = 3.6$$

क्रांतिक अनुपात की गणना के लिए सूत्र

$$CR = \frac{M_1 - M_2}{SED}$$

$$= \frac{20.8 - 17.8}{0.912}$$

$$= \frac{3}{0.912}$$

$$= 3.289$$

6.3 प्रदत्तों का विवेचन एवं विश्लेषण

तालिका-5

क्र. संख्या	विद्यार्थी	कुल संख्या	मध्यमान	क्रांतिक अनुपात
1	छात्र	25	20.8	3.289
2	छात्राएं	25	17.8	

तालिका संख्या 5 से स्पष्ट होता है कि महोबा नगर के छात्र तथा छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 20.8 तथा 17.8 प्राप्त हुआ है | इन दोनों का क्रांतिक अनुपात 3.289 ज्ञात हुआ है | छात्रों का मध्यमान अधिक है तथा छात्राओं का मध्यमान कम है| आता स्पष्ट है की छात्राओं की अपेक्षा छात्र महोबा नगर की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति अधिक जागरूक है|

अध्याय सप्तम
निष्कर्ष, उपादेयता एवं सुझाव

अनुसंधान की वैज्ञानिक प्रक्रिया में तथ्यों को सापेक्षित कर, निष्कर्षों का सामान्यीकरण करके वर्ग विशेष के लिए अनुमोदित करना, अनुसंधान का अन्तिम चरण माना गया है| अनुसंधान क्षेत्र में निष्कर्षों व सामान्य प्रदत्त को एक सार्वभौमिक आकार प्रदान करता है इसके द्वारा अनुसंधानकर्ता को निष्कर्षों के महत्व को मूल्यांकित कर सकने की योग्यता प्राप्त होती है|

किसी भी शोध कार्य द्वारा प्राप्त परिणामों के लिए यह पूर्णत: विश्वसनीयता के साथ नहीं कहा जा सकता है कि यह शोध पूर्णत: शोध क्षेत्र से सम्बन्धित सम्पूर्ण पहलुओं को पूर्ण करता है, क्योंकि प्राय: कुछ पहलू अछूते रह जाते हैं| इसलिए परिणाम के साथ-साथ यह भी नितान्त आवश्यक है कि शोध अध्ययन के सन्दर्भ में उन सीमाओं का उल्लेख किया जाये, जिनसे शोध अध्ययन सीमित हो जाता है| अतः प्रस्तुत अध्याय को उपर्युक्त वर्णित बिंदुओं के आधार पर निम्न सोपानों में प्रस्तुत किया गया है-

- ❖शोध अध्यन के निष्कर्ष
- ❖शोध अध्यन की शैक्षिक उपादेयता
- ❖अध्ययन के सुझाव
- ❖भावी शोध अध्यन हेतु सुझाव

7.1.1 शोध अध्यन के निष्कर्ष

सम्पूर्ण शोध कार्य के विश्लेषण एवं व्याख्या के पश्चात मुख्य कार्य उद्देश्यों की पूर्ति करना है| प्रस्तुत शोध कार्य में 6 उद्देश्य लिए गए थे| जिनका विवरण प्रथम अध्याय में प्रस्तुत किया जा चुका है| लघु शोध प्रबन्ध के उद्देश्यों के सन्दर्भ में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये गए-

उद्देश्य 1: महोबा नगर की ऐतिहासिक विरासतों का निम्न के संदर्भ में अध्ययन करना-

❖ स्थापत्य एवं वास्तुकला

चन्देलों ने लगभग चार शताब्दियों तक महोबा में शासन किया। वे केवल महान् विजेता तथा सफल शासक ही न थे। अपित स्थापत्य एवं वास्तुकलाओं के प्रसार तथा संरक्षण में भी वे पूर्ण दक्ष थे। उनके शान्तिपूर्ण शासन तथा देश की भौगोलिक स्थिति ने भी इस दिशा में पूर्ण योगदान दिया है और महोबा के मंदिरों के रुप में कला अपने चरम लक्ष्य तक पहुंच गई थी इसके प्रत्यक्ष उदाहरण महोबा के विभिन्न ऐतिहासिक स्मरके बताती है| खकरामठ, सूर्य मन्दिर, जैन मन्दिर, आदि स्थलों से चन्देलकालीन स्थापत्य एवं वास्तुकला की जानकारी मिलती है। चन्देल काल में जनता की समृद्धि ने स्थापत्य कलाओं के इतिहास में एक अमिट छाप डाल दी थी। चन्देल युग में वास्तुकला तथा मूर्तिकला उन्नति के चरमबिन्दु पर पहुँच गई थी और उनके उत्कृष्ट नमूनों का महोबा में बाहुल्य है| किन्तु इन स्थलों के अध्ययन से पता चलता है की अधिकांश स्थल नष्ट हो गए है | जिनके सिर्फ भग्नावशेष ही बचे है| अतः आवश्यकता इस बात की है की इन स्थलों के आस-पास स्वछता रखा जाए| और इनका संरक्षण किया जाए |

❖ विशेषता एवं महत्व

जिस तरह ओड़ीशा का कोणार्क सूर्य मंदिर अपनी अनूठी स्थापत्य कला के लिए दुनिया भर में मशहूर है, महोबा का अद्भुत सूर्य मंदिर भी उतना ही मशहूर है यह मंदिर ऊंचाई पर है | महोबा के मंदिर

विशालता के कारण नहीं बल्कि अपनी भव्य योजना और समानुपातिक निर्माण के लिये प्रसिद्ध हैं। मंदिर के चारों ओर कोई प्राचीर नहीं होती। मंदिर ऊँचे चबूतरे (अधिष्ठान) पर बना होता है। इसमें गर्भगृह, मंडप, अर्धमंडप, अंतराल और महामंडल होते हैं। इन मंदिरों की विशेषता इनके शिखर हैं जिनके चारों ओर अंग शिखरों की पुनरावृत्ति रहती है। इन मंदिरों की मूर्तिकला भी इनकी विशेषता है। इनके निर्माण में सूक्ष्म कौशल के साथ ही अद्भुत सजीवता दिखलाई पड़ती है |

❖ **दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों को चिह्नित करना**

शोधकर्त्री द्वारा महोबा नगर के विभन्न दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों को चिह्नित किया गया है महोबा के जैन मन्दिर, सूर्य मंदिर रहिलिया, आल्हा की गिल्ली, खाकरमठ, आल्हा-ऊदल, आल्हा-ऊदल व उनका अखाड़ा, शिव ताण्डव, बड़ी चण्डिका, छोटी चंडिका (महिषासुरमर्दनी), मनिया देवी, विजय सागर, कीरत सागर, कजलियों का मेला, मदन सागर तालाब, गोरख गिरी खंड, पान शोध केंद्र, लक्ष्मी नारायण मंदिर, रामकुंड|

उद्देश्य 2: महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन

महोबा नगर के छात्र-छात्राओं में नगर की ऐतिहासिक विरासतों की जागरूकता के प्रति सार्थक अंतर पाया गया| छात्राओं की अपेक्षा छात्र विरासतों के प्रति अधिक जागरूक हैं|

उद्देश्य 3: महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति छात्र-छात्राओं की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना

महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति छात्र-छात्राओं की समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया|

उद्देश्य 4: महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों में पर्यटन की संभाव्यता का अध्ययन करना

प्रस्तुत उद्देश्य के सन्दर्भ में महोबा नगर की ऐतिहासिक विरासतों का सर्वेक्षण किया गया |और यह पाया गया की महोबा नगर क्षेत्र में धर्म, वास्तुशिल्प, संस्कृति, तथा विशिष्ट रीति-रिवाजों से युक्त अनेक ऐतिहासिक स्थल हैं जिनके गौरवमयी अतीत से प्रभावित हुए बिना व्यक्ति नहीं रह सकता| पर्यटन की दृष्टि से यह क्षेत्र रमणीय क्षेत्र है यहां के पुरातन मंदिर विविध सुरुचिपूर्ण, मूर्तियां, पहाड़ियां जल सागर अत्यंत सुंदर हैं| इस क्षेत्र में पर्यटन की पर्याप्त संभाव्यता है अतः इस क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए अस्थापना सुविधाएं, यातायात, आवास, सुरक्षा की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए|

उद्देश्य 5 : महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता के सम्बन्ध हेतु सुझाव प्रस्तुत करना

प्रस्तुत उद्देश्य के सन्दर्भ में पाया गया की महोबा नगर के स्नातक स्तर के विद्यार्थी अपनी विरासतों के प्रति पूर्णता: जागरूक नहीं है अत: जागरूकता के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकतें है-

❖ विद्यालयों में समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम किये जाये

❖ लोगों की जागरूकता के लिए संगोष्ठिया, एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया जाये

❖ ऐतिहासिक विरासतों के संरक्षण के लिए विभन्न कार्यक्रम चलाये जाये

❖ विद्यार्थियों द्वारा नुक्कड़ नाटक किये जाये ताकि लोग ऐतिहासिक स्मारकों के आस-पास साफ- सफाई रख सकें|

7.2 शोध अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता

प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम शिक्षा जगत, विद्यार्थियों, शिक्षकों, इतिहासकारों, पुरातत्विदों एवं, समाज में लोगों के दृष्टिकोणों को विकसित करने में सहायक होंगे |ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं के समाधान में विभन्न नये आयाम प्रस्तावित किये जा सकते है |

प्रस्तुत अध्ययन में दर्शनीय ऐतिहासिक विरासतों, धार्मिक स्थलों, जैन मंदिर, चंडिका देवी, शिव तांड,व मनिया देवी तथा प्राकृतिक स्थलों मदन सागर, कीरत सागर, विजय सागर इत्यादि पर विस्तृत चर्चा की गई है साथ ही पर्यटन जैसे विश्वव्यापी महत्व वाले विषय पर प्रकाश डाला गया है जिससे पर्यटन के विकास पर बल दिया जा सके साथ ही सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष से संबंधित त्यौहारों, लोक नृत्यों, महोत्सवों एवं कलात्मक वस्तुओं आदि के बारे में विश्लेषणात्मक ढंग से चर्चा की गयी है | प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों, शिक्षकों, इतिहासकारों, पुरातत्वविदों के लिए अत्यंत सहायक सिद्ध होगा|

7.3 अध्ययन के सुझाव

- ❖ ऐतिहासिक विरासतों के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए, संगोष्ठिया, कार्यशालाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का आयोजन किया जाना चाहिए|
- ❖ऐतिहासिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए लिए शासन-प्रशासन स्तर पर कार्य- योजना तैयार की जानी चाहिए
- ❖इस क्षेत्र/ प्रांत की ऐतिहासिक विरासत/ शौर्य/ वीरता/ पराक्रम/ संस्कृति/ पुरुषार्थ का इतिहास उस क्षेत्र विशेष में विस्तृत रूप से/अतरिक्त सहायक पाठ्यपुस्तक के रूप में शामिल किए जाने की आवश्यकता है

❖शोध अध्ययन में पाया गया की खकरामठ स्मारक तक पहुँचने में नाव का सहारा लेना पड़ता है| अतः मठ तक पहुँचने के लिए पुरातत्व विभाग पुल की व्यवस्था करे|

❖ शैक्षिक भ्रमण हेतु ऐतिहासिक स्थल तक पहुँचने के मार्ग संकेत नगर के मुख्य चौराहों में लगाया जाये |

❖ ऐतिहासिक विरासतों के संरक्षण एवं आस-पास की स्वछता के लिए लोगों को प्रेरित किया जाना चाहिए |

7.4 भावी शोध अध्ययन हेतु सुझाव

शोध अध्ययन के क्षेत्र में सत्य की खोज निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है| कोई भी शोध कार्य पूर्ण व अन्तिम नहीं होता वरन् यह एक ऐसी श्रृंखला है जिसमें एक कड़ी के संपन्न होने के साथ ही दूसरी कड़ी की शुरुआत होती है| कोई भी अध्ययन एक निश्चित परिधि तक सीमित रहता है किन्तु उसी क्षेत्र में और कार्य अन्य शोधार्थियों द्वारा किये जा सकते हैं| ताकि समस्या का अधिक स्पष्ट निरूपण हो सके | शोध अध्ययन के अधिक स्थिर एवं विश्वसनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए एक ही शोध समस्या पर कई शोध अध्ययन किया जाना आवश्यक होता है| शोध समस्या के लिए अधिक समय व धन की आवश्यकता होती है जो कि केवल एक शोधार्थी के लिए संभव नहीं होता जिसके कारण वह एक विषय के विभिन्न पहलुओं पर कार्य नहीं कर पाता | एक शोध समस्या पर किए गया शोध कार्य दूसरे शोधार्थी द्वारा किये गये शोध अध्ययन के लिए मार्गदर्शन और सुझाव का कार्य करता है| इस शोध कार्य के आधार पर भावी अध्ययन के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं –

❖ वर्तमान शोध अध्ययन मात्र उत्तर प्रदेश के केवल महोबा नगर तक सीमित था | भावी अनुसंधान में अन्य जनपदों को सम्मलित किया जा सकता है|

❖ प्रस्तुत अध्ययन महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों तक सीमित रहा भावी अध्ययन बुन्देलखण्ड के अन्य दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों पर किया जा सकता है|

❖ प्रस्तुत अध्ययन स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की जागरूकता तक सीमित रहा| भावी अध्ययन माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों की जागरूकता पर किया जा सकता है|

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- ❖ अग्रवाल, सौरभ (संस्करण: प्रथम) ***शैक्षिक अनुसन्धान तथा पद्धति शास्त्र***; चेतना प्रकाशन, आगरा
- ❖ कौल, लोकेश (2014) ***शैक्षिक अनुसन्धान की कार्यप्रणाली***; विकास पब्लिशिंग हाउस, नोएडा
- ❖ गुप्ता, एस. पी. (2015) ***अनुसन्धान संदर्शिका;*** शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
- ❖ राय, पारसनाथ (2007) ***अनुसंधान परिचय;*** लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा
- ❖ शर्मा, आर. ए ; ***शिक्षा अनुसंधान:*** सूर्या पब्लिकेशन, आगरा
- ❖ चौरसिया, वासुदेव: **चन्देल कालीन महोबा एवं जनपद हमीरपुर-महोबा के पुरावशेष**
- ❖ मिश्र, प्रत्युष: (2002) ***बुन्देलखण्ड में पर्यटन विकास नियोजन कालिंजर के विशेष सन्दर्भ***
- ❖ रामसजीवन (2006): ***बुन्देलखण्ड के दुर्ग एक ऐतिहासिक अध्ययन***
- ❖ तिवारी, वरुण (2007): ***बुन्देलखण्ड के वैष्णव मन्दिरों का सांस्कृतिक अध्ययन***
- ❖ पाठक, एस. पी. (2014): ***बुंदेलखंड के जैन मंदिर: सांस्कृतिक अध्ययन***

Webliography

1. http://hindi.indiawaterportal.org/index.php/node/46137

2. https://www.isro.gov.in/node/6850

3.https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AE%E0%A4%B9%E0%A5%8B%E0%A4%AC%E0%A4%BE_%E0%A4%9C%E0%A4%BF%E0%A4%B2%E0%A4%BE

4. http://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/13016

5. http://mahoba.nic.in/history2.htm

6 https://www.prabhasakshi.com/news/currentaffairs/story/21966.html

7http://www.drishtiias.com/hindi/general-studies-articles/economic-importance-of heritage-sites

8.https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%AF_%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%A5%E0%A4%BE%E0%A4%AA%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%95%E0%A4%B2%E0%A4%BE

9.https://bundelkhand.in/bundelkhand-ek-sanskritik-parichay/chandel-eugenic-fine-arts

10.https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AE%E0%A4%B9%E0%A5%8B%E0%A4%AC%E0%A4%BE

11.https://www.jagranjunction.com/days/historical-monuments-world-heritage-day-2012/

12.https://www.bbc.com/hindi/entertainment/story/2007/01/070111_guestedit_fifth.shtml

परिशिष्ट (अ)
स्वनिर्मित
ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता मापनी

शोध पर्यवेक्षक

डॉ. राजीव अग्रवाल
शिक्षक - शिक्षा विभाग
अतर्रा पी.जी. कॉलेज अतर्रा (बाँदा)

शोधकर्त्री

प्रिन्सी चौरसिया
एम. एड. छात्रा

नाम .... उम्र .... लिंग .... दिनांक ....

विद्यालय का नाम .... कक्षा.........................

पता...

निर्देश

जीवन में हर व्यक्ति को स्वतः के लिए, समुदाय में एवं साथियों के बारे में हमेशा विभिन्न प्रकार के निर्णय लेने पड़ते हैं | कुछ निर्णय व्यक्ति स्वतः लेता है तो कुछ समूह में लेने पड़ते है | प्रत्येक निर्णय का व्यक्ति के जीवन में व्यापक असर पड़ता है | इसलिए निर्णय लेते समय विशेष सावधानी की जरुरत पड़ती है | किसी उच्च शैक्षिक संस्थान में पढ़ते वक्त शिक्षार्थी को बहुत सारी बातों का ध्यान रखना होता है| | विद्यार्थी को अपने आस- पास के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक होना आवश्यक है | अत: विद्यार्थियों की जागरूकता को मापने हेतु ऐसी मापनी का निर्माण किया जा रहा है जो विद्यार्थियो से पूंछे जाने वाले प्रश्नों पर आधारित है | उन प्रश्नों को हल करने के लिए कुछ सामन्य निर्देश दिए जा रहे है जो की निम्न लिखित है –

- ❖ कृपया उपर्युक्त समस्त सूचनाएं आवश्यक समझकर पूर्ण करें |
- ❖ निम्नलिखित सभी प्रश्नों को सावधानी पूर्वक पढ़कर कोष्ठक में दिए गये किसी एक उत्तर पर सही(✓) का निशान लगाये

1. जनसंख्या की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य कौन सा है?

उत्तर प्रदेश ☐ मध्य प्रदेश ☐ राजस्थान ☐ बिहार ☐

2. जनसंख्या की दृष्टि से उत्तर प्रदेश का सबसे छोटा जिला कौन सा है?

हमीरपुर ☐ लखीमपुर खीरी ☐ महोबा ☐ कानपुर ☐

3. भारत का प्रसिद्ध सूर्य मंदिर कहां स्थित है?

मुम्बई ☐ दिल्ली ☐ कोणार्क(उड़ीसा) ☐ गुवहाटी ☐

4. क्या आप जानते हैं कि महोबा जिले में कोई सूर्य मंदिर है?

हँ ☐ नहीं ☐ तटस्थ ☐

5. खजुराहो शैली का चित्रण महोबा के किस मंदिर में मिलता है

हनुमान मन्दिर ☐ सूर्यमंदिर ☐ चण्डिका देवी ☐

6. महोबा का सूर्य मंदिर किस राजवंश के द्वारा बनवाया गया था?

चौहानों के द्वारा ☐ राजपूतों के द्वारा ☐ चंदेलों के द्वारा ☐ बुंदेलों के द्वारा ☐

7. महोबा के सूर्य मंदिर की शिलाओं का निर्माण किन पत्थरों पर कराया गया है

ग्रेनाइट पत्थर ☐ क्वार्टजाइट पत्थर ☐ चूना पत्थर ☐ स्फटिक पत्थर ☐

8. सूर्य मंदिर को क्षति किस शासक ने पहुंचाई थी?

औरंगजेब ☐ कुतुबुद्दीन – ऐबक ☐ पृथ्वी राज चौहान ☐ मुहम्द गौरी ☐

9. आल्हा- ऊदल के कुलदेवी कौन है?

मनिया देवी ☐ चण्डिका देवी ☐ काली देवी ☐ दुर्गा देवी ☐

10. महोबा में बड़ी चंडिका मंदिर किस मार्ग में है?

बाँदा रोड ☐ चरखारी रोड ☐ राठ रोड ☐ छतरपुर रोड ☐

11. बड़ी चंडिका के लगभग सौ मीटर उत्तर में कौन सी प्रतिमा स्थापित है?

शिव ताण्डव ☐ लक्ष्मी नारायण मन्दिर ☐ जैन मन्दिर ☐ बड़े हनुमान मन्दिर ☐

12. बड़ी चंडिका के लगभग 200 मीटर पश्चिम में कौन सी स्मारक है?

आल्हा की गिल्ली ☐ जैन मन्दिर ☐ बड़े हनुमान मन्दिर ☐

13.जैन धर्म में कुल कितने तीर्थंकर हुए हैं?

20 ☐ 19 ☐ 24 ☐ 29 ☐

14. जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर कौन है?

नेमिनाथ ☐ ऋषभदेव ☐ सुपार्श्वनाथ ☐ अजितनाथ ☐

15.जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर कौन है?

महावीर ☐ नेमिनाथ ☐ ऋषभदेव ☐ अरिष्टनेमि ☐

16. जैन धर्म के वास्तविक संस्थापक कौन है ?

महावीर ☐ नेमिनाथ ☐ ऋषभदेव ☐ अरिष्टनेमि ☐

17.खकरामठ किस वास्तु की सौन्दर्प्रियता का द्योतक है?

कीरतवर्मन ☐ मलखान ☐ मदन वर्मन ☐

18.क्या खकरामठ की रचना खजुराहो शैली जैसी प्रतीत होती है?

हाँ ☐ नहीं ☐ तटस्थ ☐

19.खकरामठ को पूर्व में किस नाम से जाना जाता था ?

शंकरगढ़ ☐ देवगढ़ ☐ हनुमानगढ़ ☐ विजयगढ़ ☐

20.मदन सागर के बांध पर मध्य में स्थित कौन सी देवी प्रतिमा है

मनिया देवी ☐ छोटी चण्डिका ☐ महिषासुर मर्दनी ☐ बड़ी चण्डिका ☐

21.मदन सागर के पूर्वी तट पर प्राकृतिक पाषाण शिला के ऊपर कौन सी स्मारक है?

आल्हा की गिल्ली ☐ खकरामठ ☐ रामकुंड ☐ नागोरिया ☐

22.चंदेलों की राजधानी किस जिले को कहा जाता है?

महोबा ☐ चित्रकूट ☐ झाँसी ☐ बाँदा ☐

23.आल्हा का जन्म स्थान है ?

सिरसा ☐ पथरीगठ ☐ दसपुरवा ☐ महोबा ☐

24.आल्हा खण्ड काव्य किसकी रचना है ?

पृथ्वीराज ☐ जगनिक ☐ चन्दबरदाई ☐ सुभद्राकुमारी चौहान ☐

25.आल्हा की गिल्ली की ऊंचाई कितने फीट है ?

20 फीट ☐ 9 फीट ☐ 5 फीट ☐ 40 फीट

26.निम्न स्थलों में उस स्थल की पहचान कीजिए जो महोबा में नहीं है

मदनसागर ☐ विजयसागर ☐ कीरतसागर ☐ श्याम सागर ☐

27. महोबा नगर में प्रसिद्ध ऐतिहासिक कजिलिया महोत्सव किस स्थल में मनाया जाता है?

मदनसागर ☐ विजयसागर ☐ कीरतसागर ☐ श्याम सागर ☐

28.क्या आपका लगता है की हमें अपने आस-पास की ऐतिहासिक विरासतों का संरक्षण करना चाहिए ?

सहमत ☐ असहमत ☐ तटस्थ ☐

29.कीरत सागर का निर्माण किस राजा के शासन काल में हुआ ?

कीर्ति वर्मा ☐ यशोवर्मन ☐ मदनवर्मन ☐ महेन्द्र वर्मन ☐

30.निम्न स्थलों में उस स्थल की पहचान कीजिए जो महोबा में नहीं है

रामकुण्ड ☐ मनिया देवी ☐ शिवताण्डव ☐ दशावतार मन्दिर ☐

परिशिष्ट (ब)

अनुक्रमणिका (soft copy)

फोल्डर क्रमांक	शीर्षक	आकार
1	लघु शोध प्रबन्ध Doc	
2	लघु शोध प्रबन्ध pdf Formate	
3	स्वानिर्मित मापनी	

स्नातक स्तर पर महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता का अध्ययन